E-mail:-adhuniksamachar2014@gmail.com
website:www.adhuniksamachar.com

आधुनिक समाचार

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

वर्ष -12 अंक - 85 | प्रयागराज, सोमवार 08 जून, 2026 | पृष्ठ- 8 | मूल्य : 3.00 रूपये

यूएस ने ईरानी रडार साइट्स पर हमला किया,ईरान ने कुवैत-बहरीन पर बैलिस्टिक मिसाइलें दागीं, आखिर कब रुकेगी जंग?

तेहरान। अमेरिका ने कहा है कि उसकी सेना ने गोरुक और केश्म आइलैंड पर ईरानी रडार साइट्स पर हमला किया। अमेरिकी सेंट्रल कमांड (ण्ङिऊण्ध्श्) के मुताबिक, पहले होर्मुज में ईरान के 4 अटैक ड्रोन मार गिराए गए, फिर आगे के हमले रोकने के लिए रडार साइट्स को निशाना बनाया गया। इसके जवाब में ईरान की रिवोल्यूशनरी गार्ड्स (आईआरजीसी) ने कहा कि उसने होर्मुज स्ट्रेट के पास दुश्मन ठिकानों पर मिसाइल हमला किया। वहीं, ण्ङिऊण्ध्श् के मुताबिक ईरान ने कुवैत और बहरीन की ओर 7 बैलिस्टिक मिसाइलें दागीं, जिनमें 6 को हवा में ही रोक दिया गया, जबकि सातवीं अपने लक्ष्य तक नहीं पहुंच सकी। इस बीच, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने कहा कि अमेरिकी हमलों के बाद ईरान की मिसाइल क्षमता काफी कमजोर हो गई है और उसके पास सिर्फ 21-22फीसदी मिसाइलें बची हैं। हालांकि, न्यूयॉर्क टाइम्स की रिपोर्ट के मुताबिक अमेरिकी खुफिया एजेंसियों का मानना है कि ईरान ने अपनी 33 में से 30 मिसाइल साइट्स फिर से चालू कर ली हैं और उसके पास अब भी करीब 70फीसदी मिसाइल भंडार मौजूद है। जंग को लेकर पूरी दुनिया के माथे की शिकन काम

नहीं हो रही.जंग कब ख़त्म होगी कहना मुश्किल हैं महीनो से दो देश अमेरिका और ईरान अपनी अपनी शर्तो पे अड़े हैं हालांकि ट्रम्प युद्ध को जल्दी ख़त्म करना चाहते हैं। पिछले 24 घंटे के 5 बड़े अपडेट्स- ट्रम्प बोले- ईरानी सुप्रीम लीडर से मुलाकात संभवः अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने कहा कि अगर अमेरिका-ईरान डील होती है तो वे ईरान के सुप्रीम लीडर से मिलने को तैयार हैं। उन्होंने यह भी बताया कि ईरान से एनरिच्ड यूरेनियम लेने के लिए सेना भेजने पर विचार हुआ था, लेकिन ज्यादा जोखिम होने के कारण प्लान रद्द कर दिया गया। ईरान ने 2 हजार से ज्यादा कैदियों को राहत दीः ईरान के सुप्रीम लीडर मुजतबा खामेनेई ने 2,000 से ज्यादा कैदियों की सजा माफ या कम करने को मंजूरी दी। जासूसी और राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़े मामलों में सजा काट रहे कैदियों को इस राहत में शामिल नहीं किया गया है। लेबनान में इजराइली हमले जारीः सीजफायर की बातचीत के बावजूद दक्षिणी लेबनान में इजराइल के हवाई हमले जारी है। कई इलाकों में स्ट्राइक हुईं, जिनमें कम से कम 4 लोगों की मौत और कई घायल हुए। ईरान का तेल निर्यात बुरी तरह गिराः अमेरिकी नाकेबंदी के बाद मई में ईरान का कच्चे तेल का निर्यात 84फीसदी तक गिर गया। लॉयड्स लिस्ट की रिपोर्ट के मुताबिक अब ईरान बड़े टैंकरों की जगह छोटे जहाजों से तेल भेज रहा है, ताकि अमेरिकी कार्रवाई से बचा जा सके। आयरलैंड ने इजराइली मंत्रियों पर बैन लगायाः आयरलैंड ने इजराइल के दो कट्टरपंथी मंत्रियों इतामार बेन-ग्वीर और बेजालेल स्मोट्रिच के देश में प्रवेश पर रोक लगा दी। आयरलैंड सरकार ने कहा कि दोनों नेताओं के बयान फिलिस्तीनियों के खिलाफ नफरत और हिंसा को बढ़ावा देने वाले रहे हैं।सीएनएन की रिपोर्ट के मुताबिक, अमेरिका और ईरान के बीच संभावित शांति समझौता इस बात पर टिका है कि ट्रम्प प्रशासन ईरान की फ्रीज की गई 24 अरब डॉलर (करीब 2.29 लाख करोड़ रूपए) की संपत्ति जारी करता है या नहीं। ईरान के सुप्रीम लीडर के सैन्य सलाहकार मोहसिन रेजाई ने कहा, 'बातचीत अड़चन में फंसी है और इसे खत्म करना ट्रम्प के हाथ में है। गेंद अब ट्रम्प के पाले में है।' रिपोर्ट के अनुसार, ईरान चाहता है कि अंतरिम समझौते पर हस्ताक्षर होते ही 12 अरब डॉलर जारी किए जाएं, जबकि बाकी 12 अरब डॉलर बाद में दिए जाएं। वहीं अमेरिकी अधिकारियों को डर है कि अभी फंड जारी करने से ईरान पर बना दबाव कमजोर पड़ जाएगा।

पीओके वाले गिलगित-बाल्टिस्तान में चुनाव से भारत नाराज,कहा- इससे अवैध कब्जा वैध नहीं होगा

नई दिल्ली। भारत ने पाकिस्तान के कब्जे वाले गिलगित-बाल्टिस्तान में 7 जून को होने वाले विधानसभा चुनावों का कड़ा विरोध किया है। विदेश मंत्रालय ने शुक्रवार को जारी बयान में कहा कि पाकिस्तान जिस क्षेत्र पर अवैध और जबरन कब्जा किए हुए है, वहां चुनाव कराने की उसकी योजना पूरी तरह अस्वीकार्य है। विदेश मंत्रालय ने कहा कि पूरा जम्मू-कश्मीर और लद्दाख, जिसमें गिलगित-बाल्टिस्तान भी शामिल है, भारत का अभिन्न और अविभाज्य हिस्सा है। इसलिए पाकिस्तान को उन क्षेत्रों में किसी भी तरह की राजनीतिक प्रक्रिया चलाने का कोई अधिकार नहीं है। चुनाव कराने जैसी गतिविधियां वहां की जमीनी हकीकत को नहीं बदल सकतीं। गिलगित-बाल्टिस्तान में रविवार को 10 जिलों की 24 सीटों पर मतदान कराया जाएगा। यह भारत के केंद्र शासित प्रदेश लद्दाख का हिस्सा है। हालांकि, यह पाकिस्तान के कब्जे में है। इसी वजह से वहां होने वाले हर चुनाव या राजनीतिक कदम पर भारत आमतौर पर आपत्ति दर्ज कराता है। गिलगित-बाल्टिस्तान में साढ़े पांच साल बाद चुनाव हो रहे हैं। इससे पहले यहां नवंबर 2020 में चुनाव हुए थे, जिनमें पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ ने जीत हासिल की थी। यहां का कार्यकाल 5 साल का होता है। 2020 में चुनी गई विधानसभा ने नवंबर 2025 में अपना कार्यकाल पूरा कर लिया था। नियमों के मुताबिक इसके बाद नए चुनाव कराए जाने थे, लेकिन खराब मौसम और प्रशासनिक कारणों से मतदान समय पर नहीं हो सका। क्षेत्र में सर्दियों के दौरान भारी बर्फबारी होती है, जिससे कई इलाकों में आवागमन प्रभावित हो जाता है। इसी वजह से चुनाव को टाल दिया गया और बाद में 7 जून 2026 की तारीख तय की गई। गिलगित-

बाल्टिस्तान और पीओके (जिसे पाकिस्तान आजाद जम्मू-कश्मीर कहता है) की प्रशासनिक व्यवस्था अलग-अलग रही है। पीओके का अपना अलग संविधान, राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और विधानसभा है। पाकिस्तान पीओके को कुछ स्वायत्तता देता है, हालांकि वास्तविक शक्ति काफी हद तक इस्लामाबाद के पास रहती है। लेकिन गिलगित-बाल्टिस्तान की स्थिति अलग थी। 1947 से लेकर कई दशकों तक इसे पाकिस्तान ने सीधे संघीय सरकार के जरिए चलाया। यहां न तो प्रांत का दर्जा था और न ही पाकिस्तान की संसद में पूरा प्रतिनिधित्व था। फिर 2009 में पाकिस्तान ने गिलगित-बाल्टिस्तान एम्पावरमेंट एंड सेल्फ-गवर्नेंस ऑर्डर लागू किया। इसके तहत पहली बार यहां विधानसभा चुनाव हुए और एक स्थानीय सरकार बनाई गई। हालांकि तब भी विधानसभा के अधिकार सीमित थे और अहम फैसले प्रधानमंत्री लेता था। इसके बाद 2018 में पाकिस्तान ने गिलगित-बाल्टिस्तान ऑर्डर 2018 लागू किया। इसमें स्थानीय विधानसभा और मुख्यमंत्री को कई शक्तियां दी गईं। यानी कि गिलगित-बाल्टिस्तान में 'ऑर्डर ऑफ 2018' के तहत यह दूसरा चुनाव कराया जा रहा है। पीओके में 27 जुलाई को विधानसभा चुनाव होंगे-गिलगित-बाल्टिस्तान के बाद 27 जुलाई को पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) में विधानसभा चुनाव कराए जाएंगे। पीओके की विधानसभा में कुल 53 सीटें हैं। इनमें से 45 सीटों पर सीधे चुनाव होता है, जबकि 8 सीटें महिलाओं, तकनीकी विशेषज्ञों और धार्मिक विद्वानों के लिए आरक्षित हैं। पीओके में विधानसभा का कार्यकाल पांच साल का होता है। इससे पहले 2021 में पीओके विधानसभा चुनाव में इमरान खान की पार्टी ने 45 में से 25 सीटें जीतकर सरकार बनाई थी। इसके बाद सरदार अब्दुल कय्यूम नियाजी प्रधानमंत्री बने। हालांकि अप्रैल 2022 में इमरान खान की सरकार गिर गई। इसका असर वहां की राजनीति पर भी पड़ा। मई 2022 में सरदार अब्दुल कय्यूम नियाजी ने इस्तीफा दे दिया। इसके बाद पीटीआई ने ही सरदार तनवीर इलियास को नया प्रधानमंत्री बनाया। लेकिन अप्रैल 2023 में पीओके की उच्च अदालत ने उन्हें अदालत की अवमानना के मामले में अयोग्य घोषित कर दिया।

इसके बाद उनका पद चला गया और एक बार फिर नया प्रधानमंत्री चुनना पड़ा। इसके बाद पीटीआई के ही चौधरी अनवरुल हक प्रधानमंत्री बने। लेकिन कुछ ही समय बाद उन्होंने इमरान खान और पीटीआई से दूरी बना ली और खुद को स्वतंत्र नेता के रूप में स्थापित किया। बाद में पाकिस्तान मुस्लिम लीग (नवाज), पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी और अन्य दलों के समर्थन से उनकी सरकार चलती रही। इस दौरान पीओके में महंगाई, बिजली दरों और आटे की कीमतों को लेकर बड़े पैमाने पर प्रदर्शन भी हुए।

2024 में कई शहरों में विरोध प्रदर्शन हिंसक हो गए थे, जिसके बाद पाकिस्तान की संघीय सरकार को सब्सिडी और आर्थिक राहत पैकेज की घोषणा करनी पड़ी। जम्मू-कश्मीर विधानसभा में 24 सीटें रिजर्व-2019 में जम्मू-कश्मीर पुनर्गठन के बाद बने परिसीमन ढांचे के तहत जम्मू-कश्मीर विधानसभा में 24 सीटें पीओके और गिलगित-बाल्टिस्तान के लिए आरक्षित हैं। इन सीटों पर चुनाव नहीं होते क्योंकि ये क्षेत्र फिलहाल पाकिस्तान के नियंत्रण में हैं। इसलिए इन्हें खाली रखा जाता है।

अन्नामलाई की नई पार्टी से 10 लाख से अधिक लोग जुड़े,समर्थन में तमिलनाडु बीजेपी उपाध्यक्ष ने भी इस्तीफा दिया

चेन्नई। तमिलनाडु भाजपा के पूर्व अध्यक्ष के अन्नामलाई की नई पार्टी 'इधु नम्मा इयक्कम' को शुरुआत में ही बड़ा जनसमर्थन मिलने का दावा किया गया है। अन्नामलाई के अनुसार, आंदोलन शुरू होने के 10 घंटे के भीतर 10 लाख से ज्यादा लोगों ने रजिस्ट्रेशन कराया है। अन्नामलाई ने इसे लोगों का आंदोलन बताते हुए कहा कि यह राज्य के भविष्य को लेकर साझा सोच और मिशन का प्रतीक है। अन्नामलाई ने 2 जून को भाजपा की प्राथमिक सदस्यता से इस्तीफा दे दिया था। इसकी चिट्ठी शुक्रवार को सामने आई। अन्नामलाई के समर्थन में भाजपा के प्रदेश उपाध्यक्ष करु नागराजन ने भी पार्टी से इस्तीफा दे दिया है। उन्होंने पत्रकारों से बातचीत में कहा- मैंने और कई भाजपा नेताओं ने अन्नामलाई का समर्थन करने का फैसला किया है। अन्नामलाई ने भाजपा से इस्तीफा देने के बाद 5 जून को नई पार्टी बनाने की घोषणा की। सोशल मीडिया पर वीडियो मैसेज में कहा, 'आज हम अपना स्वतंत्र आंदोलन खड़ा कर रहे हैं। हमारी पार्टी तमिलनाडु में 2031 का विधानसभा चुनाव लड़ेगी।'

उन्होंस 'We The Leaders' नाम से नया प्लेटफॉर्म और wetheleader.org वेबसाइट भी लॉन्च की। इसके साथ ही कोयंबटूर में एपीजे अब्दुल कलाम सेंटर फॉर इथि?क्स एंड पॉलिटिक्स संस्थान भी स्थापित करने की घोषणा की है। अन्नामलाई कर्नाटक कैडर के आईपीएस अधिकारी रहे हैं। अन्नामलाई बोले- बदलाव, आम आदमी की राजनीति करेंगे, 5 बातेंः- मेरा मकसद तमिलनाडु में बदलाव लाना और राजनीति के तौर-तरीकों को बेहतर बनाना था। जनता दशकों से चली आ रही आम राजनीति से ऊब गई है। बदलाव चाहती है। आलाकमान से मतभेद थे। मेरे-उनके विचार एक जैसे नहीं रहे। मैं उस सोच को बदलना चाहता था, जिसके अनुसार राजनीति रईसों और कुछ खास लोगों के लिए है, आम ?आदमी के लिए नहीं। मेरे आंदोलन का उद्देश्य व्यक्ति पूजा और सत्ता में परिवारवाद को खारिज कर सियासी तस्वीर बदलना है। इस आंदोलन का उद्देश्य मौजूदा पार्टियों से कम्पिटीशन किए बिना लोगों की जरूरतों को प्राथमिकता देना है। यह तय करना मुश्किल था कि भाजपा में रहूं या तमिल लोगों से जुड़ा रहूं। मैंने 4 दिसंबर 2025 को पार्टी को बताया कि मैं इस्तीफा दूंगा। राज्य की जनता कई दशकों से चली आ रही आम राजनीतिक चर्चाओं से ऊब चुकी थी और बदलाव चाहती थी। पिछले दशक में कई बार बदलाव की लहरें उठीं, लेकिन वे टिक नहीं पाईं। अन्नामलाई आईपीएस अधिकारी, छह साल भाजपा में रहे-अन्नामलाई कर्नाटक कैडर के आईपीएस अधिकारी रहे हैं। नौकरी छोड़कर 2020 में भाजपा से जुड़े। पार्टी ने पहले प्रदेश उपाध्यक्ष और फिर अध्यक्ष बनाया। उन्होंने तमिलनाडु में भाजपा को मजबूती दी। वे आक्रामक राजनीति के कारण लोकप्रिय हुए। राज्य प्रमुख पद से हटाए जाने और एआईएडीएमके के साथ भाजपा के गठबंधन से नाराज थे। तमिलनाडु में इसी साल विधानसभा चुनाव हुए। 4 मई को आए रिजल्ट में एक्टर विजय की 2 साल पुरानी पार्टी टीवीके को 108 सीटें मिलीं। टीवीके ने कांग्रेस और अन्य छोटी पार्टियों के साथ मिलकर राज्य में पहली बार सरकार बनाई। डीएमके को 59 और एआईडीएमके को 47 सीटों पर जीत मिली। एआईडीएमके के साथ गठबंधन में चुनाव लड़ने वाली भाजपा ने 27 सीटों पर उम्मीदवार उतारे थे। लेकिन सिर्फ एक सीट पर जीत हासिल कर सकी थी। चुनावी नतीजों के बाद से ही अन्नामलाई के पार्टी छोड़ने की चर्चाएं शुरू हो गई थीं।

मानसून गोवा तक पहुंचा, केरलम में बारिश का रेड अलर्ट, वायनाड-कासरगोड में स्कूल बंद, ट्रेकिंग पर रोक

नयी दिल्ली। 3 दिन की देरी से आने के बाद मानसून ने रफ्तार पकड़ ली है। केरलम, कर्नाटक,

तमिलनाडु को पार कर मानसून गोवा पहुंच गया है। मुंबई में भी इसके आज कल में पहुंचने की संभावना है। फिलहाल पणजी, बेंगलुरु, सलेम, पंबन में मानसून के कारण तेज बारिश हो रही है। वहीं, केरलम में आज बारिश का रेड अलर्ट है। रेड अलर्ट का मतलब है यहां अगले 24 घंटे में 20सेमी से बहुत ज्यादा बारिश हो सकती है। वायनाड-कासरगोड में स्कूल आज बंद रहेंगे। टूरिस्ट ट्रेकिंग स्पॉट पर जाने, पहाड़ी रास्तों पर रात में ट्रैवलिंग और पत्थर निकालने के काम पर रोक लगा दी गई है। आईएमडी के मुताबिक 3 दिन में मानसून असम, मेघालय, मिजोरम, त्रिपुरा, मणिपुर, नगालैंड, अरुणाचल और बंगाल के कुछ हिस्सों तक पहुंच सकता है। 10 दिन में यह बिहार, झारखंड और ओडिशा में आ सकता है। हालांकि, बाद में मानसून अटक सकता है। स्काईमेट वेदर के एक्सपर्ट जीपी शर्मा के मुताबिक एमपी, छत्तीसगढ़, ओडिशा, बंगाल में मानसून को आगे बढ़ाने के लिए बंगाल की खाड़ी में एक मजबूत सिस्टम की जरूरत होती है, जो फिलहाल मौजूद नहीं है। ऐसे में इन राज्यों में मानसून की रफ्तार धीमी पड़ सकती है। गुजरात को छोड़कर बाकी सभी राज्यों में प्री-मानसून एक्टिव है। राजस्थान, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, जम्मू-कश्मीर में भी भारी बारिश हो रही है। इन राज्यों में आज के लिए ऑरेंज अलर्ट जारी किया गया है। गर्मी का दौर जारी- आंध्र प्रदेश में हीटवेव, ओडिशा के 8 शहरों में पारा 41डिग्री के पार- जिन राज्यों में प्री-मानसून की एक्टिविटीज से आंधी बारिश हो रही है। वहां तापमान में 5डिग्री से 10डिग्री तक की गिरावट दर्ज की गई है। लेकिन अभी भी कुछ राज्यों में गर्मी का असर कम नहीं हुआ है। आंध्र प्रदेश में हीटवेव का अलर्ट जारी किया गया है। ओडिशा के 8 शहरों का पारा 41डिग्री के पार रिकॉर्ड किया गया। उत्तर प्रदेश में वाराणसी, बांदा, कानपुर और प्रयागराज में भी पारा 40डिग्री के ऊपर रिकॉर्ड किया गया। मौसम विभाग ने 9 जून से हीटवेव का नया दौर भी शुरू होने की आशंका जताई है। प्रदेश के 43 जिलों में हल्की बारिश का अलर्ट है। 21 जिलों में आंधी-तूफान आ सकता है। मौसम विभाग का कहना है कि 24 घंटे में पश्चिमी विक्षोभ का असर खत्म होगा। इसके कारण पिछले 12 दिन से चले रहे आंधी-बारिश के सिलसिले पर ब्रेक लगेगा। 9 जून से एक बार फिर गर्मी बढ़ने लगेगी।

सहारा रेगिस्तान में ट्रक फंसा, प्यास से 49 लोगों की मौत

सहारा। नाइजर के सहारा रेगिस्तान में प्यास से कम से कम हादसे में केवल दो लोग बच पाए। उन्होंने किसी तरह रेगिस्तान पार

49 लोगों की मौत हो गई। बीबीसी की एक रिपोर्ट के मुताबिक जिस ट्रक में वे यात्रा कर रहे थे, वह रास्ते में खराब हो गया था। कर नजदीकी शहर असामाका तक पहुंचने में सफलता हासिल की और वहां अधिकारियों को घटना की जानकारी दी। जब

यात्रियों ने कई दिनों तक इसे ठीक करने की कोशिश की, लेकिन वे इसमें कामयाब नहीं हो पाए। यह ट्रक माली के हारौबा शहर से रवाना हुआ था, जो नाइजर सीमा से 300 किलोमीटर से अधिक दूर है। वे एक मुस्लिम धार्मिक उत्सव में शामिल होने के बाद लौट रहे थे। यात्रा के दौरान उनका ट्रक खराब हो गया। वे रेगिस्तान के ऐसी जगह फंस गए थे जहां बेहद ज्यादा तापमान होता है। वहां पानी और बाकी जरूरी सामान मिलना बहुत मुश्किल होता है। ऐसी जगह फंस जाने के कारण उनके पास मौजूद पानी खत्म हो गया। इस बचाव दल मौके पर पहुंचा तो ट्रक के नीचे और उसके आसपास दर्जनों शव पड़े मिले। बचाव टीम ने मृतकों के शवों को सामूहिक कब्र में दफना दिया। घटनास्थल से लौटते समय बचाव दल को एक और खराब ट्रक मिला। इस ट्रक में 60 से अधिक लोग सवार थे, जो बैटरी खराब होने के कारण पिछले तीन दिनों से रेगिस्तान में फंसे हुए थे। बचाव टीम ने थके हुए और परेशान यात्रियों को पानी दिया। साथ ही उन्होंने ट्रक की मरम्मत में मदद की, जिसके बाद वे वापस लौट पाए।

जमीन पर उतर रही कॉकरोच पार्टी,साथ कौन-कौन,सरकार कैसे निपटेगी,क्या किसी मूव्मेंट की तैयारी!

नयी दिल्ली। कॉकरोच जनता पार्टी, यानी सीजेपी के फाउंडर अभिजीत दीपके अमेरिका से भारत पहुंचने के

बाद करीब एक घंटे एयरपोर्ट के अंदर रहे। प्रोटेस्ट की परमिशन मिलने के बाद अभिजीत और सीजेपी के समर्थक जंतर-मंतर पहुंच चुके हैं। बड़ी संख्या में फोर्सेज भी तैनात हैं। 20 दिन पहले चीफ जस्टिस के बयान से पैदा हुए इस व्यंगात्मक ऑनलाइन कैंपेन ने कुछ घंटों में बीजेपी से ज्यादा इंस्टाग्राम फॉलोअर्स जुटा लिए थे। अब ये इंटरनेट से निकलकर सड़क पर उतर गया है। कॉकरोच जनता पार्टी के फाउंडर अभिजीत दीपके ने 1 जून को एक वीडियो में बताया, '6 जून की सुबह मैं दिल्ली आ रहा हूं, शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे की मांग करने। आप सभी एयरपोर्ट आकर मुझसे मिलें। हम सब मिलकर पार्लियामेंट स्ट्रीट पुलिस स्टेशन जाएंगे और जंतर-मंतर पर शांतिपूर्ण प्रदर्शन की अनुमति मांगेंगे।' 3 जून को कॉकरोच पार्टी ने दिल्ली में अपनी पहली प्रेस कॉन्फ्रेंस की, जिसमें खोजी पत्रकार सौरव दास, आईआईटी कानपुर से पढ़े और मैनेजमेंट कंसल्टिंग फर्म 'मैकिन्से एंड कंपनी' में काम कर चुके आशुतोष रांका, पॉलिटिकल रिसर्चर और फिल्ममेकर विजेता दहिया पार्टी के प्रवक्ता के तौर पर शामिल हुए। 4 जून को अभिजीत ने एक्स पर एक और वीडियो जारी करते हुए समर्थकों को एयरपोर्ट आने से मना किया। दीपके ने कहा, 'मैं खुद पुलिस स्टेशन आऊंगा और फिर हम सब वहां से जंतर-मंतर के लिए बढ़ेंगे, क्योंकि इतने लोगों के एयरपोर्ट पर इकट्ठा होने से जनता और सुरक्षा बलों को असुविधा होगी।' अब अभिजीत और उनके साथी जंतर-मंतर पहुंच चुके हैं। पार्लियामेंट स्ट्रीट पुलिस स्टेशन जाने से पहले ही अभिजीत को जंतर-मंतर पर प्रदर्शन की अनुमति मिल गई। कॉकरोच पार्टी की सबसे बड़ी मांग है केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान का इस्तीफा। दीपके ने एक्स पर जारी वीडियो में कहा, 'नीट का एग्जाम रद्द होने से 5 स्टूडेंट्स ने सुसाइड किया। सीबीएसई, सीयूईटी और एसएससी जैसे एग्जाम में गड़बड़ी से लाखों बच्चे प्रभावित हुए। इसे लेकर देश के अलग-अलग शहरों में आंदोलन हुए, फिर भी प्रधान ने इस्तीफा नहीं दिया। इस देश में सरकार की जवाबदेही नहीं रह गई है। ऐसा कब तक चलेगा?' सीजेपी मुख्य प्रवक्ता सौरव दास का भी कहना है कि प्रधान के इस्तीफे के लिए वेबसाइट पर डाली गई पिटीशन का अब तक 8 लाख से ज्यादा लोग समर्थन कर चुके हैं, जो साबित करते हैं कि स्टूडेंट्स का गुस्सा अब बर्दाश्त के बाहर हो चुका है। सवाल-3ः दिल्ली में प्रोटेस्ट करने की अनुमति कैसे मिली?जवाबः अनुमति मिलने की उम्मीद कम थी। संविधान के आर्टिकल 19 के तहत, 'सभी नागरिकों को शांतिपूर्ण और बिना किसी हथियार के इकट्ठा होने का अधिकार है।' दिल्ली का जंतर-मंतर प्रदर्शन की नियत जगह है। हालांकि कानूनी अव्यवस्था न हो, इसके लिए पुलिस से 7 दिन पहले लिखित परमिशन लेनी पड़ती है। दिल्ली पुलिस की गाइडलाइंस के मुताबिक, जंतर-मंतर पर प्रोटेस्ट सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे के बीच ही होना चाहिए। अस्थायी तंबू नहीं लगाए जा सकते। एक दिन में 1,000 से ज्यादा लोग हिस्सा नहीं ले सकते।' सीजेपी की तरफ से अभिजीत आज 6 जून को, यानी प्रोटेस्ट के दिन ही पुलिस से इसकी अनुमति लेने जाने वाले थे। प्रोटेस्ट में काफी भीड़ होने का अनुमान था। प्रवक्ता विजेता दहिया ने परमिशन न लेने को पार्टी की स्ट्रैटेजी का हिस्सा बताया। उन्होंने कहा, 'इस शांतिपूर्ण प्रोटेस्ट के पीछे लोगों की भावनाएं हैं। लोग अभिजीत के साथ जुड़े हैं। इसीलिए हमने तय किया कि अभिजीत खुद पुलिस से मिलकर परमिशन मांगेंगे। हमें उम्मीद है कि प्रशासन हमें अनुमति देगा।' हालांकि 5 जून की देर रात कुछ रिपोर्ट्स में कहा गया कि दिल्ली पुलिस ने तय किया कि सीजेपी को जंतर-मंतर पर प्रदर्शन की अनुमति दे दी जाए। साथ ही कुछ शर्तें भी तय कीं। ऐसा लगता है कि एयरपोर्ट पर लैंड होने के बाद उन्हें प्रदर्शन की जरूरी शर्तें बताई गईं। अभिजीत के एयरपोर्ट से बाहर आने के पहले ही करीब 9 बजे सीजेपी के एक्स हैंडल ने बताया कि जंतर-मंतर पर प्रोटेस्ट करने की अनुमति मिल गई है। फिलहाल प्रदर्शन जारी है। अगर प्रशासन को अव्यवस्था फैलने के संकेत मिलते हैं, तो वो प्रोटेस्ट वाली जगह पर बीएनएसएस की धारा 163 लागू कर सकता है। पुरानी सीआरपीसी में इसे धारा 144 कहते थे। इसके तहत पुलिस 5 या लोगों को इकट्ठा होने पर रोक लगा सकती है। ये रोक 60 दिन तक लागू रह सकती है। सुप्रीम कोर्ट ने एक मामले में कहा था कि बड़े विरोध प्रदर्शनों में खुफिया इनपुट्स के आधार पर भी इस तरह के आदेश दे सकती है और इसमें कुछ भी गैरकानूनी नहीं है। सवाल-4ः क्या राजनीतिक पार्टी बनाने का भी इरादा है, उसके लिए क्या-क्या करना होगा?जवाबः अभिजीत ने शुरुआत में कहा था कि उनका कोई राजनीतिक पार्टी बनाने का इरादा नहीं है। हालांकि अब जिस तरह जमीन पर प्रदर्शन की तैयारी है, प्रवक्ता नियुक्त किए गए, प्रेस कॉन्फ्रेंस हो रही और जाने-माने लोग जुड़ रहे हैं, उससे राजनीतिक पार्टी के संकेत मिलते हैं। राजनीतिक पार्टी बनाने के लिए रिप्रेजेंटेशन ऑफ पीपुल एक्ट, 1951 की धारा 29 (ए) के तहत पार्टी बनाने के ऐलान से 30 दिनों के अंदर चुनाव आयोग में आवेदन देना होता है। पार्टी में कम से कम 100 भारतीय मेंबर होने चाहिए। **आगे की खबर पेज संख्या 07 पर..**

'धरती का फेफड़ा' हैं पेड़-पौधे, पर्यावरण संरक्षण के लिए पौधारोपण बेहद जरुरी - पोस्टमास्टर जनरल कृष्ण कुमार यादव

'विश्व पर्यावरण दिवस' पर पोस्टमास्टर जनरल कृष्ण कुमार यादव ने पर्यावरण अनुकूल जीवन शैली अपनाने व प्राकृतिक संसाधन बचाने के लिए किया प्रेरित

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) कानपुर। बीते शुक्रवार को पर्यावरण दिवस केवल एक औपचारिक आयोजन नहीं, बल्कि एक वैश्विक आंदोलन है। होगा ध पर्यावरण संरक्षण के लिए हमें अपनी भावी पीढ़ी को जागरूक करना होगा ध उन्होंने लोगों को पर्यावरण संरक्षण, प्रदूषण नियंत्रण और सतत विकास के प्रति जागरूक करने और हर डाककर्मी से पौधारोपण द्वारा उनके निवारण में भागीदार बनने का एवं इको फ्रेंडली उत्पादों का इस्तेमाल करने को भी प्रेरित किया। सिंगल-यूज प्लास्टिक का कम उपयोग, पानी और बिजली की बचत, सार्वजनिक परिवहन या साइकिल का उपयोग जैसी पहलों से पर्यावरण संरक्षण की शुरुआत व्यक्तिगत स्तर से भी की जा सकती है। प्रवर डाक अधीक्षक श्री चिराग मेहता ने कहा की पर्यावरण संरक्षण के लिये पौधे लगाना हम सबका दायित्व है ध सहायक निदेशक अल्पेश शाह ने एक व्यक्ति, एक वृक्ष के नारे के साथ पौधारोपण के महत्त्व को बताया। सहायक निदेशक रितुल गाँधी और वारिस व्होरा ने कहा कि वृक्ष हमें जीवन देता है इसलिए वृक्ष लगाने के साथ-साथ इनका संरक्षण भी बहुत जरुरी है।

पर्यावरण संरक्षण आज की सबसे बड़ी जरुरत है, आने वाली पीढ़ी को जीवित रहने के लिए शुद्ध आक्सीजन मिले इसके लिए ज्यादा से ज्यादा पौधे लगाएं व परिवार के सदस्य की भांति उसकी देखभाल करें। वैश्विक स्तर पर निरंतर बढ़ रहे तापमान को भी हम इन्हीं पेड़-पौधों के जरिये नियंत्रित कर सकते हैं। उक्त उद्गार उत्तर गुजरात परिक्षेत्र के पोस्टमास्टर जनरल श्री कृष्ण कुमार यादव ने 'विश्व पर्यावरण दिवस' पर सपरिवार पौधारोपण करने के पश्चात व्यक्त किये। पोस्टमास्टर जनरल श्री कृष्ण कुमार यादव ने कहा कि, प्रकृति हमारा घर है, इसकी रक्षा करना हमारा धर्म है। धरती पर पेड़ के बिना मानव जीवन की कल्पना करना असंभव है। पेड़ से हमें न सिर्फ ऑक्सीजन मिलता है बल्कि तमाम जीवनदायक चीजें मिलती हैं। इसीलिए पेड़ को 'धरती का फेफड़ा' भी कहा जाता है। श्री यादव ने कहा कि विश्व पर्यावरण दिवस का उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाना तथा जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, जैव विविधता संरक्षण और सतत विकास जैसे मुद्दों पर वैश्विक कार्रवाई को प्रोत्साहित करना है। पोस्टमास्टर जनरल श्री कृष्ण कुमार यादव ने कहा कि सिर्फ दिवस विशेष पर वृक्षारोपण से बात नहीं बनेगी बल्कि हमें हर दिन पर्यावरण दिवस की तरह जागरूक रहना होगा तथा हर माह पौधा लगाना

25वीं अंतर वाहिनी पीएसी पूर्वी जोन कंप्यूटर, एंटी सैवोटॉज चेक, विधि विज्ञान, पुलिस फोटोग्राफी, वीडियोग्राफी एवं डॉग स्क्वायड प्रतियोगिता का समापन समारोह

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नैनी/प्रयागराज। दिनांक 03.06.2026 से 05.06.2026 तक आयोजित 25वीं अंतर वाहिनी पीएसी पूर्वी जोन कंप्यूटर, एंटी सैवोटॉज चेक, विधि विज्ञान, पुलिस फोटोग्राफी, वीडियोग्राफी एवं डॉग स्क्वायड प्रतियोगिता का सकुशल समापन मुख्य अतिथि पुलिस उपमहानिरीक्षक पीएसी कानपुर अनुभाग कानपुर श्री अतुल शर्मा(आईपीएस) महोदय द्वारा वाहिनी सभागार में किया गया। इस प्रतियोगिता मे पीएसी पूर्वी जोन की 42वीं वाहिनी, 04वी वाहिनी, 12वीं वाहिनी, 20वीं वाहिनी, 33वीं वाहिनी, 34वीं वाहिनी, 36वीं वाहिनी, 37वीं वाहिनी, 39वीं वाहिनी, 48वीं वाहिनी कुल 10 वाहिनी के प्रतिभागियों द्वारा प्रतिभाग किया गया। सर्वप्रथम मुख्य अतिथि महोदय के आगमन पर आयोजन सचिव/सेनानायक श्री राजेश कुमार श्रीवास्तव (आईपीएस) द्वारा ट्रीपॉट देकर स्वागत किया गया। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर महोदय द्वारा पौधारोपण किया गया। तत्पश्चात समस्त टीम प्रबंधक से परिचय प्राप्त कर सभी खेलों में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले खिलाड़ियों को महोदय द्वारा पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। सैम हिग्गिनबॉटम इंस्टीट्यूट ऑफ एग्रीकल्चर, टेक्नोलॉजी एंड साइंसेज के प्रोफेसर(एचओडी) एवं स्टॉफ प्रोफेसर (चयन समिति/निर्णायक मंडल) को महोदय द्वारा प्रशस्ति पत्र एवं पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। सभी के उज्ज्वल भविष्य की कामना की गई। संपूर्ण प्रतियोगिता में 42वीं पीएसी नैनी प्रयागराज ने प्रथम स्थान प्राप्त किया जिसके उपरांत इस वाहिनी को चल वैजयंती प्रदान किया गया। पीएसी पूर्वी जोन के झंडे को अगली प्रतियोगिता हेतु सम्मानपूर्वक रखा गया। महोदय द्वारा समापन की घोषणा की गई। उपस्थित समस्त अधिकारी एवं कर्मचारीगण को सूक्ष्म जलपान कराया गया। कार्यक्रम के दौरान चतुर्थ वाहिनी पीएसी सेनानायक श्री सर्वेश कुमार मिश्रा, 42वीं वाहिनी पीएसी उपसेनानायक श्री उदय प्रताप सिंह, वाहिनी चिकित्सक डॉ ओम प्रकाश, डॉ प्रवीण कुमार सिंह, शिविरपाल श्री अरविंद कुमार सिंह, सहायक शिविरपाल श्री हरदास, सूबेदार मेजर श्री राधेश्याम यादव एवं अन्य अधिकारी/कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

'एक पौधा धरती माँ के नाम' अभियान के तहत हुआ वृक्षारोपण,विश्व पर्यावरण दिवस पर राष्ट्रीय कृषि छात्र संघ द्वारा वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। शुक्रवार को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर राष्ट्रीय कृषि छात्र संघ (एनएएसओ) के पर्यावरण प्रकोष्ठ 'पर्यावरण सुरक्षा सेना' द्वारा 'एक पौधा धरती माँ के नाम' अभियान के अंतर्गत डॉ. राजेंद्र प्रसाद छात्रावास, कुलभास्कर आश्रम पीजी कॉलेज (कृषि महाविद्यालय), प्रयागराज में वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में कृषि छात्रों, शिक्षकों एवं संगठन पदाधिकारियों ने बढ़-चढ़कर सहभागिता करते हुए पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि महाविद्यालय की प्रधानाचार्या डॉ. गीतांजलि मौर्या जी ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण आज समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। वृक्ष न केवल हमें शुद्ध वायु प्रदान करते हैं, बल्कि पृथ्वी के पारिस्थितिक संतुलन को बनाए रखने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने छात्रों से अधिक से अधिक पौधे लगाने एवं उनकी नियमित देखभाल करने का आह्वान किया। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि एवं राष्ट्रीय कृषि छात्र संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. भाष्कर दूबे जी ने कहा कि जलवायु परिवर्तन, बढ़ते प्रदूषण एवं प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन के कारण पर्यावरण गंभीर चुनौतियों का सामना कर रहा है। ऐसे समय में युवाओं की जिम्मेदारी और बढ़ जाती है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति यदि अपने जीवन में कम से कम एक पौधा लगाकर उसका संरक्षण करे, तो पर्यावरण संरक्षण की दिशा में बड़ा परिवर्तन लाया जा सकता है। उन्होंने कृषि छात्रों से पर्यावरण एवं कृषि के बीच गहरे संबंध को समझते हुए हरित क्रांति के साथ हरित पर्यावरण अभियान को भी आगे बढ़ाने का आह्वान किया। इस अवसर पर महाविद्यालय के प्रो. पवन कुमार पचौरी जी (शारीरिक शिक्षा विभाग), डॉ. विकास सिंह जी (भौतिकी विभाग) एवं राजकुमार त्रिपाठी जी (छात्रावास अधीक्षक) ने भी वृक्षारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया तथा छात्रों को प्रकृति के प्रति अपने दायित्वों का निर्वहन करने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश कृषि छात्र संघ के प्रदेश कार्यालय प्रभारी श्याम सिंह कुशवाहा जी, प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य आलोक तिवारी जी सहित बड़ी संख्या में कृषि छात्र उपस्थित रहे। सभी प्रतिभागियों ने पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संकल्प लिया तथा परिसर को अधिक हरित एवं स्वच्छ बनाने की प्रतिबद्धता व्यक्त की। कार्यक्रम के अंत में छात्रावास परिसर में विभिन्न प्रजातियों के छायादार एवं फलदार पौधों का रोपण किया गया। उपस्थित सभी लोगों ने 'एक पौधा धरती माँ के नाम' अभियान को जन-जन तक पहुंचाने तथा पर्यावरण संरक्षण को जनआंदोलन बनाने का संकल्प लिया।

डीएम-एसपी ने तहसील सदर में सम्पूर्ण समाधान दिवस में फरियादियों की सुनी समस्याएं,शिकायतों का समयबद्ध व गुणवत्तापूर्ण से निस्तारण कराए अधिकारी - डीएम

सम्पूर्ण समाधान दिवस में कुल 87 शिकायतें आयी, 07 का मौके पर हुआ निस्तारण

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)रायबरेली। शनिवार को जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका की अध्यक्षता में तहसील सदर में सम्पूर्ण समाधान दिवस का आयोजन किया गया। जिलाधिकारी ने कहा कि जन सामान्य की शिकायतों का स्थानीय स्तर पर समाधान किया जाना सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है जिसके क्रम में तहसील व थानों में सम्पूर्ण समाधान दिवस का आयोजन किया जाता है। इसमें स्थानीय नागरिक उपस्थित होकर अपनी समस्याओं का समाधान करा सकते है। जिलाधिकारी ने कहा कि सभी अधिकारी जनता की इन शिकायतों का निस्तारण त्वरित एवं समयबद्ध तरीके से एक सप्ताह में कराना सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि शिकायतों के निस्तारण में यदि कोई समस्या है तो उसका कारण स्पष्ट करते हुए अवगत कराना सुनिश्चित किया जाये। जिलाधिकारी ने बताया कि तहसील सदर में आयोजित सम्पूर्ण समाधान दिवस में राजस्व विभाग 59, पुलिस विभाग 17, विकास विभाग 08 व अन्य विभाग 03 कुल 87 प्रकरण प्राप्त हुए, जिसमें से 07 प्रकरणों का निस्तारण मौके पर ही कर दिया गया। शेष प्रकरणों के निस्तारण हेतु संबंधित विभागों को इस निर्देश के साथ उपलब्ध करा दिये गये कि उनका निस्तारण एक सप्ताह में कराना सुनिश्चित कराए। पुलिस अधीक्षक रवि कुमार ने भी पुलिस से संबंधित मामलों को सुना और संबंधित को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। इस अवसर पर मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ0 नवीन चन्द्रा, उपजिलाधिकारी सदर गौतम सिंह, तहसीलदार सदर आवृत्ति श्रीवास्तव सहित संबंधित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

डीएम की अध्यक्षता में पीएम आवास योजना (ग्रामीण) की समीक्षा बैठक सम्पन्न

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका की अध्यक्षता में शनिवार को कलेक्ट्रेट सभागार में प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) की समीक्षा बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में परियोजना निदेशक डीआरडीए प्रमोद सिंह ने स्थायी पात्रता सूची बनाये जाने हेतु प्राप्त एस0ओ0पी0 में बिन्दुवार दर्शित प्रक्रिया के सम्बन्ध में समस्त खण्ड विकास अधिकारियों को विस्तृत जानकारी दी गयी तथा अवगत कराया गया कि समस्त खण्ड विकास अधिकारियों को एस0ओ0पी0 के सम्बन्ध में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से भारत सरकार की टेक्निकल टीम द्वारा भी प्रशिक्षण प्रदान किया जा चुका है।इस सम्बन्ध में ड्राफ्ट स्थायी पात्रता सूची को 30 जून 2026 के पूर्व ग्राम सभा के निर्धारित रोस्टर के अनुसार प्रस्तावित बैठक में अंतिम रुप प्रदान करने की प्रक्रिया में प्रत्येक लाभार्थी के आवास सर्वे 2024 में दर्ज तथ्यों की चेकिंग करते हुए आवश्यक संशोधन किया जायेगा तथा सभी संशोधनों को कारण सहित ग्राम सभा की बैठक की कार्यवाही में सम्मिलित किया जायेगा। ग्राम सभा की बैठक की कार्यवाही के प्रत्येक भाग को ग्राम प्रधान/प्रशासक एवं ग्राम पंचायत सचिव द्वारा हस्ताक्षर करते हुए सुस्पष्ट पीडीएफ एवं जी0पी0एस0 युक्त फोटोग्राफ को आवास साफ्ट पर अपलोड कराया जायेगा। परियोजना निदेशक द्वारा बैठक में खंड विकास अधिकारियों को यह भी अवगत कराया गया कि प्रत्येक लाभार्थी के फैक्ट चेकिंग के लिए सचिवों को दिये जा रहे सिस्टम जनरेटेड प्रिंट में उल्लिखित बिन्दुओं के अतिरिक्त निर्धारित बिंदुओं पर भी चेकिंग करते हुए आख्या दिया जाना अनिवार्य होगा। निर्धारित बिंदुओं के अनुसार यदि लाभार्थी को पूर्व में प्रधानमंत्री/मुख्यमंत्री आवास योजना का लाभ मिल चुका है। यदि लाभार्थी मृतक हो गया है और उसका कोई वारिस नहीं है। यदि लाभार्थी स्थायी रूप से पलायित हो गया हो। जिलाधिकारी ने समस्त खण्ड विकास अधिकारियों को निर्देशित किया गया कि विकास खण्ड स्तर पर तत्काल समस्त सचिवों तथा सेक्टर प्रभारी की बैठक करके एस0ओ0पी0 के अनुसार पूरी प्रक्रिया की जानकारी/प्रशिक्षण प्रदान कर दिया जाये तथा बैठक की कार्यवाही का कार्यवृत्त भी प्रेषित किया जाये। जिलाधिकारी ने यह भी निर्देश दिये कि यदि सर्वे किये गये लाभार्थियों की ड्राफ्ट सूची का गलत वेरीफिकेशन किया गया तो सम्बन्धित सचिव ग्राम पंचायत के विरूद्ध अनुशासनिक व वैधानिक कार्यवाही प्रस्तावित करते हुए अवगत कराया जाए साथ ही ग्राम सभा की बैठक में प्रस्तावित किसी भी प्रकार के संशोधन पाये जाने पर उसकी जांच जिला स्तरीय अधिकारियों से करायी जाये। किसी भी दशा में सूची में सम्मिलित पात्र लाभार्थी का नाम कटने न पाये यह सुनिश्चित कराया जाये। बैठक में मुख्य विकास अधिकारी अंजुलता, जिला विकास अधिकारी वर्षा सिंह सहित समस्त खण्ड विकास अधिकारी उपस्थित रहे।

डीएम ने गोरा बाजार टीकाकरण केंद्र का किया निरीक्षण,शत-प्रतिशत टीकाकरण सुनिश्चित कराने के दिये निर्देश

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका ने शनिवार को नगर क्षेत्र स्थित टीकाकरण केंद्र (आंगनबाड़ी केंद्र) गोरा बाजार का स्थलीय निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी ने केंद्र पर उपलब्ध वैक्सीन की स्थिति, लाभार्थियों की उपस्थिति एवं भीड़ प्रबंधन व्यवस्था, साथ ही स्वच्छता एवं अन्य व्यवस्थाओं का गहन जायजा लिया। निरीक्षण में टीकाकरण सत्र का संचालन सुचारू रूप से किया जा रहा था, सत्र स्थल पर ए0एन0एम, आशा द्वारा सेवाएं दी जा रही थी तथा सत्र स्थल पर वैक्सीन, दवाएं व अन्य सामग्री की पर्याप्त उपलब्धता थी। जिलाधिकारी ने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि टीकाकरण केंद्रों पर पर्याप्त मात्रा में वैक्सीन की उपलब्धता बनी रहे यह सुनिश्चित कराया जाए, जिससे किसी भी लाभार्थी को असुविधा का सामना न करना पड़े। उन्होंने कहा कि टीकाकरण के लिए आने वाले लोगों की संख्या को देखते हुए उचित भीड़ प्रबंधन किया जाए।निरीक्षण के दौरान उन्होंने केंद्र की साफ-सफाई व्यवस्था पर विशेष ध्यान देते हुए निर्देश दिए कि परिसर में नियमित रूप से स्वच्छता बनाए रखी जाए तथा सैनिटाइजेशन की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित की जाए। जिलाधिकारी ने कहा कि शासन की मंशा के अनुरूप टीकाकरण अभियान को सफल बनाने हेतु सभी संबंधित विभाग आपसी समन्वय के साथ कार्य करें और निर्धारित लक्ष्य के अनुसार शत-प्रतिशत टीकाकरण कवरेज सुनिश्चित किया जाए।इस अवसर पर मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ0 नवीन चंद्रा, अर्बन नोडल डॉ0 रावेन्द्र कुमार यादव,जिला स्वास्थ्य शिक्षा अधिकारी डी0एस0अस्थाना शहरी स्वास्थ्य समन्वयक विनय पाण्डेय सहित संबंधित अधिकारी एवं स्वास्थ्य विभाग की टीम उपस्थित रही।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी का जन्मोत्सव हिंदू युवा वाहिनी प्रयागराज ने धूमधाम से मनाया

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। शुक्रवार को लोकप्रिय मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश एवं हिंदू युवा वाहिनी के मुख्य संरक्षक योगी आदित्यनाथ जी के जन्म दिन के अवसर पर हिंदू युवा वाहिनी प्रयागराज द्वारा वोट क्लब के बगल शंकर जी के मंदिर में पूजन हवन करके उनके दीर्घायु जीवन की कामना की गई तत्पश्चात बेली हॉस्पिटल प्रयागराज में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया, तथा मेडिकल चौराहे पर निशुल्क प्याऊ का उद्घाटन किया गया तत्पश्चात वृक्षारोपण एवं मरीज को फल वितरण किया गया है इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रज्ञा मंडल प्रभारी कुंवर ज्ञानेंद्र प्रताप सिंह जी एवं पूर्व मंत्री सिद्धार्थ नाथ जी विधायक श्री हर्षवर्धन बाजपेई जी विधायक पियूष रंजन निषाद जी विधायक वाचस्पति जी भाजपा महानगर अध्यक्ष श्री संजय गुप्ता जी हिंदू युवा वाहिनी के जिला अध्यक्ष अमित प्रताप सिंह जी जिला संयोजक ओपी द्विवेदी जी महानगर अध्यक्ष तुषार वर्मा जी जिला महामंत्री दिनेश यादव जी दिलीप जायसवाल जी अनुज द्विवेदी जी सैकड़ो की संख्या में पदाधिकारी मौजूद रहे।

एक पेड़ माँ के नाम अभियान में गूंजा पर्यावरण संरक्षण का संदेश, पौधरोपण के साथ सफाई मित्रों का हुआ सम्मान

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) मैहर। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर शुक्रवार को 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान के तहत मैहर के एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय स्थित माँ शारदा ऑडिटोरियम में पर्यावरण संरक्षण को समर्पित भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में पर्यावरण जागरूकता, स्वच्छता एवं वृक्षारोपण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से विभिन्न गतिविधियां आयोजित की गईं। कार्यक्रम की शुरुआत विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत पर्यावरण संरक्षण पर आधारित सांस्कृतिक कार्यक्रमों से हुई। गीत, नृत्य एवं नाट्य प्रस्तुतियों के माध्यम से विद्यार्थियों ने प्रकृति संरक्षण, जल बचाओ, वृक्ष लगाओ और स्वच्छ पर्यावरण का संदेश दिया। प्रस्तुतियों ने

उपस्थित अतिथियों एवं दर्शकों का मन मोह लिया। इसके पश्चात विद्यालय परिसर में पौधरोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें जनप्रतिनिधियों, अधिकारियों एवं नागरिकों ने पौधे लगाकर पर्यावरण संरक्षण का संकल्प लिया। सभी ने अधिक से अधिक वृक्ष लगाने तथा उनकी देखभाल करने का संदेश दिया। कार्यक्रम के दौरान स्वच्छता के क्षेत्र में सराहनीय कार्य करने वाले सफाई मित्रों को प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। अतिथियों ने सफाई कर्मियों के योगदान की सराहना करते हुए कहा कि स्वच्छ और स्वस्थ समाज के निर्माण में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका है। इस अवसर पर मैहर विधायक श्रीकांत चतुर्वेदी ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण केवल एक दिन का अभियान नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक की सतत जिम्मेदारी है। कलेक्टर श्रीमती बिदिशा मुखर्जी ने लोगों से अधिक से अधिक पौधे लगाने एवं पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक रहने की अपील की। कार्यक्रम में जिला अध्यक्ष कमलेश सुहाने, संतोष सोनी, विकास तिवारी सहित विभिन्न जनप्रतिनिधि, अधिकारी, शिक्षक, विद्यार्थी एवं गणमान्य नागरिक बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। कार्यक्रम का समापन पर्यावरण संरक्षण की शपथ एवं हरित भविष्य के संकल्प के साथ किया गया।

सावित्री बाई फुले शिक्षा केंद्, जिला गौतम बुध नगर के बच्चों द्वारा पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा, विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर शुक्रवार को सेक्टर-44 की झुग्गी बस्ती स्थित सावित्री बाई फुले शिक्षा केंद्र के बच्चों ने स्वयं अपने हाथों से पौधारोपण कर समाज को पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। महिला उन्नति संस्था, जिला गौतम बुद्ध नगर व समाज सेविका रेनू बाला शर्मा द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में बस्ती के लगभग 35 से अधिक बच्चों ने भाग लिया। बच्चों ने बस्ती के आसपास खाली पड़ी जगह पर नीम, पीपल, सहजन व कनेर आदि के पौधे लगाए।

खास बात यह रही कि बच्चों ने कचरा-मलबा हटाकर पहले जगह साफ की, फिर पौधे रोपे और उनकी सुरक्षा के लिए घेरा भी बनाया। शिक्षा केंद्र की संचालिका श्रीमती रेनू शर्मा ने कहा, 'अक्सर हम सोचते हैं कि पर्यावरण की बातें सिर्फ पढ़े-लिखे लोगों के लिए हैं। लेकिन इन बच्चों ने साबित कर दिया कि प्रकृति से प्यार करने के लिए किसी डिग्री की जरूरत नहीं। बस एक अच्छा दिल चाहिए।'6 साल की एक बच्ची ने बताया, 'पेड़ लगाने से हमें ऑक्सीजन मिलती है।' किसी बच्चे ने शुद्ध वातावरण और किसी ने धरती को बचाने की बात कही। सभी बच्चों ने कहा, 'इसलिए हम सबने मिलकर पौधे लगाए। अब हम रोज पानी देंगे।'कार्यक्रम के अंत में बच्चों ने 'हमारी बस्ती, हरी-भरी बस्ती' का नारा लगाते हुए पर्यावरण की रक्षा की शपथ भी ली। उपस्थित लोगों ने भी बच्चों के इस प्रयास की खूब सराहना की।

ब्यौहारी मुक्तिधाम परिसर में हुआ वृक्षारोपण, पर्यावरण संरक्षण का दिया संदेश

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) ब्यौहारी। शासन के निर्देशानुसार

5 जून से 21 जून तक चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत नगर परिषद ब्यौहारी द्वारा वार्ड क्रमांक 13 स्थित मुक्तिधाम के पास वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में पर्यावरण संरक्षण और हरित क्षेत्र बढ़ाने के उद्देश्य से पौधे रोपे गए। इस अवसर पर सम्मानित पार्षद, मुख्य नगर पालिका अधिकारी, समाजसेवी एवं नगर परिषद के समस्त कर्मचारी उपस्थित रहे। सभी ने अधिक से अधिक वृक्ष लगाने और उनके संरक्षण का संकल्प लेते हुए आमजन से भी पर्यावरण संरक्षण में सहभागिता निभाने की अपील की।

वर्ल्ड एनवायरनमेंट कॉन्फ्रेंस 2026

बायोफ्यूल कॉन्फ्रेंस 2026 और ऑल इंडिया मेयर्स एंड आर डब्ल्यू ए समिट 2026 ने सस्टेनेबिलिटी क्लीन एनर्जी और वेस्ट मैनेजमेंट पर बातचीत को आगे बढ़ाया

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। ग्रेटर नोएडा तीनों बड़े इवेंट्स - वर्ल्ड एनवायरनमेंट कॉन्फ्रेंस 2026, बायोफ्यूल कॉन्फ्रेंस 2026, और ऑल इंडिया मेयर्स एंड रॉवस् समिट 2026, से प्रेरितः क्लाइमेट एक्शन और नेट-ज़ीरो 2070 के लिए स्ट्रेटेजिक विज़न' टाइटल वाले एक खास सेशन में क्लाइमेट रेजिलिएंस, एनर्जी एफिशिएंसी, रिसोर्स कंजर्वेशन, सर्कुलर इकॉनमी

जो 7वें वर्ल्ड एनवायरनमेंट एक्सपो 2026 के हिस्से के तौर पर हुए, ने पॉलिसीमेकर्स, इंडस्ट्री लीडर्स, रिसर्चर्स, सस्टेनेबिलिटी एक्सपर्ट्स, म्युनिसिपल रिप्रेजेंटेटिव्स और इनोवेटर्स को क्लाइमेट एक्शन, रिन्यूएबल एनर्जी, सस्टेनेबल इंफ्रास्ट्रक्चर, वेस्ट मैनेजमेंट और एनवायरनमेंट प्रोटेक्शन पर चर्चा करने के लिए सफलतापूर्वक एक साथ लाया। (आईईएस) इंडियन एनर्जी बिशन सर्विसेज़ द्वारा इंटरनेशनल कन्फेडरेशन ऑफ़ ट्रेड एंड इंडस्ट्री (आईसीटीआई) के साथ मिलकर आयोजित, ये कॉन्फ्रेंस और समिट भारत के सस्टेनेबिलिटी और एनर्जी ट्रांज़िशन लक्ष्यों को सपोर्ट करने वाले नॉलेज एक्सचेंज, पॉलिसी डिस्कशन और कोलेबोरेटिव इनिशिएटिव्स के लिए महत्वपूर्ण प्लेटफॉर्म के रूप में काम आए। इंडियन एग्ज़िबिशन सर्विसेज़ के फाउंडर और सीईओ और वर्ल्ड एनवायरनमेंट एक्सपो के ऑर्गनाइज़र, स्वदेश कुमार ने कहा, 'वर्ल्ड एनवायरनमेंट कॉन्फ्रेंस, बायोफ्यूल कॉन्फ्रेंस स्टेकहोल्डर्स को आइडिया शेयर करने, बेस्ट प्रैक्टिस शेयर करने और एनवायरनमेंटल सस्टेनेबिलिटी, क्लीन एनर्जी अपनाने और असरदार वेस्ट मैनेजमेंट में मदद करने वाले नए सॉल्यूशन खोजने के लिए एक कॉमन प्लेटफॉर्म देते हैं। इस तरह की बातचीत एक ग्रीन और ज़्यादा मज़बूत भविष्य बनाने के लिए ज़रूरी है। साथ ही, ऑल इंडिया मेयर्स और आरडब्लूए समिट 2026 सस्टेनेबल वेस्ट मैनेजमेंट के लिए समाज, नागरिकों, लोकल बॉडीज़ की भूमिका पर ज़ोर देता है। साफ़ शहर और कस्बे ही साफ़ देश बना सकते हैं।' कॉन्फ्रेंस में उत्तर प्रदेश लेजिस्लेटिव असेंबली के मेंबर श्री नंद किशोर गुर्जर चीफ गेस्ट के तौर पर शामिल हुए। इकट्ठा हुए लोगों को एड्रेस करते हुए, आईसीटीआई के सेक्रेटरी जनरल श्री नीरज अरोड़ा ने एनवायरनमेंटल चुनौतियों से निपटने और एक सस्टेनेबल भविष्य की ओर भारत के बदलाव को तेज़ करने के लिए कलेक्टिव एक्शन, सस्टेनेबल डेवलपमेंट और पब्लिक-प्राइवेट कोलेबोरेशन के महत्व पर ज़ोर दिया।'नेचर प्रैक्टिस और भारत के लंबे समय वेज एनवायरनमेंटल और सस्टेनेबिलिटी लक्ष्यों को पाने के लिए ज़रूरी पॉलिसी फ्रेमवर्क पर फोकस किया गया। आखिरी दिन का एक बड़ा हाईलाइट ऑल इंडिया मेयर्स एंड आरडब्लूए ज़ समिट 2026 था, जो रेजिडेंट वेलफेयर एसोसिएशन (आरडब्लूए ज़) और मेयर्स का एक नेशनल लेवल का समिट था, जो वेस्ट मैनेजमेंट और सस्टेनेबल अर्बन डेवलपमेंट में कम्युनिटी और लोकल गवर्नेंस की ज़रूरी भूमिका पर चर्चा करने के लिए डेडिकेटेड था। समिट में इंडस्ट्री एक्सपर्ट्स, डिसीजन-मेकर्स, डेलीगेट्स, म्युनिसिपल बॉडीज़, डेवलपमेंट अथॉरिटीज़, पब्लिक सेक्टर अंडरटेकिंग्स, प्राइवेट सेक्टर ऑर्गनाइज़ेशन्स और सेंट्रल और स्टेट गवर्नमेंट डिपार्टमेंट्स के रिप्रेजेंटेटिव्स ने हिस्सा लिया। बातचीत इनोवेटिव वेस्ट मैनेजमेंट प्रैक्टिस, सिटिज़न पार्टिसिपेशन, अर्बन क्लीनिंग, रीसाइक्लिंग और सस्टेनेबल सिटी प्लानिंग पर फोकस थी। एक्सपो के आखिरी दिन, उत्तर प्रदेश लेजिस्लेटिव असेंबली के मेंबर श्री सोमेंद्र तोमर ने एग्ज़िबिशन देखी और एग्ज़िबिटर्स, इंडस्ट्री रिप्रेजेंटेटिव्स और स्टेकहोल्डर्स से बातचीत की। उन्होंने ऑर्गनाइज़र की कोशिशों की तारीफ़ की, जिन्होंने एनवायरनमेंटल सस्टेनेबिलिटी, क्लीन टेक्नोलॉजी, रिन्यूएबल एनर्जी, रीसाइक्लिंग सॉल्यूशन और क्लाइमेट-कॉन्शियस डेवलपमेंट को बढ़ावा देने वाला एक बड़ा प्लेटफ़ॉर्म बनाया। ग्रेटर नोएडा के इंडिया एक्सपो सेंटर एंड मार्ट में 04-06 जून 2026 तक हुआ तीन दिन का वर्ल्ड एनवायरनमेंट एक्सपो 2026 कामयाबी से खत्म हुआ, जिससे इनोवेशन, इंडस्ट्री में सहयोग, नॉलेज शेयरिंग और सस्टेनेबल डेवलपमेंट को बढ़ावा देने का अपना कमिटमेंट फिर से पक्का हुआ। इस इवेंट ने एक बार फिर एनवायरनमेंट प्रोटेक्शन, क्लीन एनर्जी, सर्कुलर इकॉनमी इनिशिएटिव और सस्टेनेबल ग्रोथ को आगे बढ़ाने के लिए डेडिकेटेड भारत के लीडिंग प्लेटफ़ॉर्म में से एक के तौर पर अपनी भूमिका दिखाई।

भगवान के प्रति विश्वास ही भगवान प्राप्ति का उत्तम मार्ग है,यशोदानंदन जी महाराज

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) वृन्दावन। यमुना नदी के तट पर पुरूषोत्तम माह में वृन्दावन धाम में चल रही भागवत कथा के तीसरे दिन कथा व्यास यशोदानंदन महाराज ने कहा कि भगवान के प्रति विश्वास ही भगवान प्राप्ति का उत्तम मार्ग है, उन्होंने कहा कि कर्दम ऋषि ने भगवान को पुत्र के रूप में चाहा था, और 10,000 वर्षों तक तपस्या की,तब भगवान ने प्रसन्न होकर देवहूति के साथ उनका ब्याह कराया और 9 पुत्रियों के बाद कपिल मुनि के रूप में भगवान ने जन्म लिया, महाराज जी ने यह भी बताया कि संत एकनाथ हजारों किलोमीटर दूर से गंगाजल लेकर रामेश्वर धाम

पहुंचे, किन्तु द्वार पर एक गधा प्यास के मारे तड़प रहा था,तो संत ने उसे वह जल पिला दिया,जल पीते ही भगवान भोलेनाथ प्रकट हो गये, सच्ची श्रद्धा और भाव के भगवान भूखे हैं। महाराज जी ने इसी प्रसंग भक्त प्रहलाद और ध्रुव की कथा सुनाई। ध्रुव ने 5 वर्ष की आयु में तपोबल से भगवान को प्राप्त कर लिया था। राजा उत्तानपाद की गोदी में बैठने पर ध्रुव को सौतेली मां के झिड़कने पर भगवान से मिलने का प्रण लेकर वह जंगल की ओर चल पड़े,तब नारद जी उनकी परीक्षा ली और प्रसन्न होकर भगवान प्राप्ति का मंत्र दिया, जिससे ध्रुव भगवान से मिल सके। भक्त प्रहलाद के पिता हिरण्यकश्यप भगवान विष्णु के दुश्मन थे,जबकि प्रहलाद भक्त। काफी प्रयासों के बाद भी वह प्रहलाद से विष्णु की भक्ति छुड़ा नहीं पाये तब उन्होंने प्रहलाद को मारने का प्रयास किया किन्तु उसमें भी वह विफल रहे, अन्त में नरसिंह भगवान का अवतार लेकर हिरण्यकश्यप का वध किया।राजा भरत के तीन जन्मों का वृतांत भी विस्तृत वर्णन किया। यशोदानंदन महाराज जी के बीच-बीच में गाये गये भजन पूरा पांडाल भक्तिमय होकर झूम उठा। भागवत कथा में कई प्रदेशों से भक्त उमड़ पड़े। उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, झारखंड, छत्तीसगढ़, बंगलौर,केरल, मध्य प्रदेश व राजस्थान आदि से उपस्थित रहे।

पर्यावरण दिवस पर पौधारोपण कर 50 बच्चों को कॉपी-पेन वितरित, केक काटकर हर्षोल्लास के साथ मनाया गया आशा ए-वन फाउंडेशन का स्थापना दिवस

पौधे से ही देश का होगा विकास लोगों को मिलेगी राहत पौधा लगाना बड़ी बात नहीं उसे बचाना आवश्यक.... आशा यादव

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) हरहुआ/वाराणसी। 'बच्चे भगवान का स्वरूप होते हैं। इन्हीं से समाज और देश का भविष्य सुरक्षित होता है। बच्चों के बिना बड़े-बड़े महल भी सूने लगते हैं।' यह बातें आशा ए-वन फाउंडेशन की संस्थापिका आशा यादव ने संस्था के प्रथम स्थापना दिवस के अवसर पर कही। शिवपुर स्थित हटिया ग्राम सभा में आशा ए-वन फाउंडेशन के तत्वावधान में संस्था का प्रथम स्थापना दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया गया तथा जरूरतमंद बच्चों के बीच कॉपी, पेन, बिस्किट एवं अन्य शैक्षणिक सामग्री का वितरण किया गया। कार्यक्रम के दौरान लगभग 50 बच्चों को शैक्षणिक सामग्री प्रदान की गई। कॉपी, पेन और बिस्किट प्राप्त करते ही बच्चों के चेहरे खुशी से खिल उठे। संस्था की संस्थापिका आशा यादव ने

बताया कि स्थापना दिवस के अवसर पर गरीब, मजदूर एवं असहाय परिवारों के बच्चों को शिक्षण सामग्री वितरित की गई, ताकि उन्हें शिक्षा के प्रति प्रोत्साहित किया जा सके। उन्होंने बताया कि विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर 'मां के नाम एक पौधा' अभियान के तहत फलदार एवं छायादार पौधों का रोपण भी किया गया। उन्होंने लोगों से अपील करते हुए कहा कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी मां के नाम एक पौधा अवश्य लगाए, क्योंकि पौधे पर्यावरण को स्वच्छ, शुद्ध एवं संतुलित बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। आशा यादव ने कहा कि संस्था का यह पहला स्थापना दिवस सभी सदस्यों के लिए गर्व और खुशी का विषय है। उन्होंने बताया कि बीते एक वर्ष से संस्था निशुल्क रूप से गरीब एवं असहाय बच्चों को शिक्षा के प्रति जागरूक करने तथा उन्हें आवश्यक सहयोग प्रदान करने का कार्य कर रही है। संस्था का उद्देश्य है कि कोई भी गरीब, मजदूर या असहाय परिवार का बच्चा शिक्षा से वंचित न रहे, क्योंकि शिक्षा के बिना मानव जीवन अधूरा है। इस अवसर पर विजय कुमार मौर्य को प्रदेश अध्यक्ष तथा प्रमोद चौरसिया को ब्लॉक अध्यक्ष मनोनीत किया गया। स्थापना दिवस पर विधि-विधान से पूजा-अर्चना के बाद केक काटकर समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मंडल अध्यक्ष कमलेश मौर्य, जिला अध्यक्ष एवं मीडिया प्रभारी सर्वेश यादव, सचिव रेखा सिंह, महामंत्री निशा देवी, उपाध्यक्ष साक्षी यादव सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. एस.डी. सिंह ने किया, जबकि धन्यवाद ज्ञापन रेखा सिंह एवं निशा देवी ने प्रस्तुत किया।

विकास आचार्य मनोहर कृष्ण महाराज बोले- भगवान भक्तों की इच्छा पूर्ण करने को आश्विन पूर्णिमा की रात्रि महारास करते हैं

श्री राम जानकी मंदिर में भागवत कथा का छठा दिन, वृंदावन से पधारे आचार्य मनोहर कृष्ण महाराज ने सुनाई महारास की कथा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)सोनभद्र। श्री राम जानकी मंदिर में चल रही श्रीमद् भागवत कथा के छठवें दिन शनिवार को वृंदावन से पधारे विकास आचार्य मनोहर कृष्ण महाराज ने महारास का विस्तार से वर्णन किया। उन्होंने कहा कि रस का उद्देश्य दर्शन देना और भक्तों के साथ लीला करना है। ब्रज की गोपियां सोचती थीं कि क्या भगवान कृष्ण केवल मैया यशोदा की उंगली पकड़कर ही नृत्य करेंगे। भक्तों की इच्छा पूर्ण करने के लिए भगवान ने आश्विन पूर्णिमा की रात्रि में महारास का दर्शन दिया। कथा में आगे अक्रूर जी द्वारा भगवान कृष्ण को मथुरा ले जाने, राक्षसों के उद्धार और कंस वध का प्रसंग सुनाया गया। महाराज ने बताया कि भगवान कृष्ण संदीपनी मुनि के आश्रम गुरुकुल में पढ़ने गए, जहां उनकी सुदामा जी से मित्रता हुई। कथा में द्वारिकापुरी के निर्माण और भगवान कृष्ण का माता रुक्मणी के साथ प्रथम विवाह के प्रसंग का भी वर्णन किया गया। विवाह की झांकी सजते ही पूरा पंडाल भक्ति भाव से विभोर हो उठा। कथा में ओम प्रकाश पाठक, महेंद्र प्रसाद शुक्ला, आशुतोष पाठक, अजीत शुक्ला, मुरलीधर शुक्ला, नितेश सिंह, प्रदीप चौरसिया, लक्ष्मीनारायण चौरसिया, सत्यनारायण चौरसिया सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।

गोष्ठी एवं वृक्षारोपण का आयोजन किया गया

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। 5 जून विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर दी आर्यस अकादमी संत नगर सोनभद्र में एकल अभियान गतिविधि विभाग जागरण शिक्षा राष्ट्र सेविका समिति सोनभद्र जिला पर्यावरण संरक्षण गतिविधि सोनभद्र विभाग के संयुक्त तत्वाधान में गोष्ठी एवं वृक्षारोपण का आयोजन किया गया जिसमें पर्यावरण संरक्षण हेतु पेड़ पानी प्लास्टिक कचरा प्रबंधन ऊर्जा संरक्षण जल संरक्षण पर निम्न वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किया गोष्ठी में प्रमुख रूप से एकलअभियान सोनभद्र विभाग के

अध्यक्ष नीरज सिंह राष्ट्र सेविका समिति की जिला कार्यवाहीका श्रीमती चित्रा जालान एवं नगर कार्यवाहीका श्रीमती प्रियंका चौबे एवं पर्यावरण संरक्षण गतिविधि के विभाग संयोजक विनोद जालान आदि लोगों ने अपने विचार व्यक्त किया कार्यक्रम का संचालन एकल अभियान के जिला संगठन मंत्री श्री रमेश जी ने किया गोष्ठी में नगर के प्रबुद्ध एवं गणमान्य जन तथा मातृ शक्तियों उपस्थिति रही।

संदिग्ध परिस्थितियों में पुरुष की मौत,पत्नी ने की पोस्टमार्टम की मांग की
पुलिस को शराब सेवन का संदेह

सोनभद्र। कोन थाना क्षेत्र में एक अधेड़ व्यक्ति की संदिग्ध परिस्थितियों में शनिवार को मौत हो गई। पीपरखाड़ ग्राम पंचायत के शिवदामर टोला निवासी 45 वर्षीय श्याम बिहारी उरांव पुत्र रामसुंदर उरांव की शुक्रवार रात मृत्यु हो गई। इस घटना के बाद परिजनों में शोक व्याप्त हो गया और क्षेत्र में विभिन्न तरह की चर्चाएं शुरू हो गईं। मृतक की पत्नी फूलमती देवी ने कोन थाने में एक प्रार्थना पत्र दिया है। उन्होंने बताया कि उनके पति श्याम बिहारी उरांव की 5 जून की शाम लगभग 6 बजे अचानक तबीयत बिगड़ गई थी, जिसके बाद उनकी मृत्यु हो गई। फूलमती देवी ने पुलिस से शव का पोस्टमार्टम कराकर मौत के कारणों की निष्पक्ष जांच कराने की मांग की है। सूचना मिलने पर पुलिस तत्काल मौके पर पहुंची। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर आगे की कार्रवाई शुरू कर दी। शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही मौत के वास्तविक कारणों का पता चल पाएगा। इस संबंध में प्रभारी निरीक्षक कोन अखिलेश कुमार मिश्रा ने जानकारी दी। उन्होंने बताया कि प्रथम दृष्टया यह मामला मृतक द्वारा शराब के सेवन से जुड़ा प्रतीत हो रहा है। हालांकि, मौत के सही कारणों का खुलासा पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही होगा। पुलिस सभी पहलुओं की जांच कर रही है और रिपोर्ट के आधार पर आवश्यक कार्रवाई की जाएगी।

कर्बला भूमि प्रकरण में आईजीआरएस निस्तारण पर उठे सवाल, जिलाधिकारी से निष्पक्ष जांच की मांग
बीजेपी अल्पसंख्यक मोर्चा मंत्री अल्ताफ अहमद क़ादरी ने कहा - शिकायत संख्या व आख्या की तिथि में अंतर, दोषियों पर कार्रवाई हो

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। जनपद मुख्यालय रॉबर्ट्सगंज स्थित कर्बला भूमि पर शनिवार को अवैध निर्माण व व्यावसायिक गतिविधियों के मामले में आईजीआरएस शिकायत के निस्तारण को लेकर विवाद खड़ा हो गया है। भारतीय जनता पार्टी अल्पसंख्यक मोर्चा काशी क्षेत्र के मंत्री अल्ताफ अहमद कादरी ने तहसील दिवस में जिलाधिकारी को प्रार्थना पत्र देकर पूरे मामले की निष्पक्ष जांच और दोषी अधिकारियों पर कार्रवाई की मांग की। अल्ताफ अहमद कादरी ने बताया कि ग्राम बभनौली स्थित आराजी संख्या 55, श्रेणी 6/3, राजस्व अभिलेखों में दर्ज कर्बला भूमि पर कथित अवैध निर्माण को लेकर उन्होंने 20 अप्रैल 2026 को जिलाधिकारी को शिकायत दी थी। इस पर जनसुनवाई पोर्टल

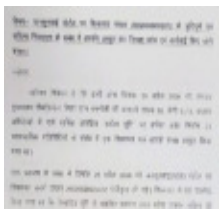

पर शिकायत संख्या 20026003072 दर्ज हुई थी। उन्होंने आरोप लगाया, 'उक्त शिकायत के निस्तारण में गंभीर अनियमितताएं हैं। जनसुनवाई पोर्टल पर अपलोड आख्या पर अंकित शिकायत संख्या वर्तमान प्रकरण से भिन्न है, जबकि आख्या की तिथि शिकायत दर्ज होने से लगभग एक माह पहले की है। इससे जांच प्रक्रिया पर सवाल खड़े हो रहे हैं।' कादरी ने कहा कि भूमि से जुड़ा प्रकरण उत्तर प्रदेश राजस्व संहिता की धारा 67 के तहत तहसीलदार न्यायिक, रॉबर्ट्सगंज के न्यायालय में विचाराधीन है।

ऐसे में निस्तारण की प्रक्रिया से जनसुनवाई की पारदर्शिता प्रभावित हो रही है। उन्होंने मांग की कि शिकायत संख्या 20026003072 के निस्तारण की व्यक्तिगत समीक्षा हो, आख्या की सत्यता जांची जाए और लापरवाही मिलने पर विभागीय-विधिक कार्रवाई हो। जिलाधिकारी ने जांच का आश्वासन दिया है।

अपहरण के दोषी सरवन कुमार को 4 वर्ष की कैद,10 हजार रुपये अर्थदंड, न देने पर दो माह की अतिरिक्त कैद भुगतनी होगी
जेल में बितायी अवधि सजा में होगी समाहित,करीब डेढ़ वर्ष पूर्व 15 वर्षीय किशोरी के अपहरण का मामला

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। करीब डेढ़ वर्ष पूर्व 15 वर्षीय किशोरी के अपहरण के मामले में अपर सत्र न्यायाधीश एफटीसी/,सीडब्लू सोनभद्र बिपिन कुमार तृतीय की अदालत ने शनिवार को सुनवाई करते हुए दोषसिद्ध पाकर दोषी सरवन कुमार को 4 वर्ष की कैद व 10 हजार रुपये अर्थदंड की सजा सुनाई। अर्थदंड न देने पर दो माह की अतिरिक्त कैद भुगतनी होगी। जेल में बिताई अवधि सजा में समाहित होगी। अभियोजन पक्ष के मुताबिक दुद्धी थाना क्षेत्र के एक गांव निवासी पीड़िता के पिता ने 29 जनवरी 2024 को दुद्धी थाने में दी तहरीर में आरोप लगाया था कि 23 जनवरी 2024 को रात्रि 2 बजे उसकी 15 वर्षीय बेटी को बहला फुसलाकर सरवन कुमार पुत्र लालकेश्वर निवासी झारोकला, थाना दुद्धी, जिला सोनभद्र कहीं भगा ले गया है। इसके पहले भी सरवन उसकी बेटी को भगा कर ले गया था। लेकिन आपसी सुलह समझौता के बाद मामला शांत हो गया था। आवश्यक कार्रवाई करें। इस तहरीर पर पुलिस ने एफआईआर दर्ज कर मामले की विवेचना किया और पर्याप्त सबूत मिलने पर विवेचक ने कोर्ट में चार्जशीट दाखिल किया था। मामले की सुनवाई करते हुए कोर्ट ने दोनों पक्षों के अधिवक्ताओं के तर्कों को सुनने, गवाहों के बयान एवं पत्रावली का अवलोकन करने के बाद दोषी सरवन कुमार को 4 वर्ष की कैद व 10 हजार रुपये अर्थदंड की सजा सुनाई। अर्थदंड न देने पर दो माह की अतिरिक्त कैद भुगतनी होगी। जेल में बितायी अवधि सजा में समाहित होगी। अभियोजन पक्ष की ओर से सरकारी वकील सत्यप्रकाश त्रिपाठी ने बहस की।

सोशल मीडिया पर रिश्वत लेने का वीडियो वायरल होने के मामले में जिलाधिकारी ने की तत्काल कार्रवाई, राजस्व निरीक्षक निलंबित
शिकायतकर्ताओं की शिकायतों का निस्तारण गुणवत्तापूर्ण व समयबद्ध तरीके से किया जाये सुनिश्चित-जिलाधिकारी

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। शासन की मन्शा के अनुरूप जिले की चारों तहसीलों में जून महीने के प्रथम शनिवार को ''सम्पूर्ण समाधान दिवस'' का आयोजन किया गया, सम्पूर्ण समाधान दिवस दुद्धी में जिलाधिकारी श्री चर्चित गौड़, अपर पुलिस अधीक्षक ऋषभ रुणवाल (आपरेशन) द्वारा शिकायतकर्ताओं की शिकायतों को सुना गया। सम्पूर्ण समाधान दिवस में भूमि विवाद से सम्बन्धित प्राप्त हुए, मामलों को स्थलीय स्थिति की जॉच करते हुए टीम द्वारा प्रकरणों की स्थलीय जॉच कर निस्तारण कराने के निर्देश सम्बन्धित अधिकारी को दिये। इस दौरान जनपद में आयोजित सम्पूर्ण समाधान दिवस के दौरान भाजपा मण्डल अध्यक्ष श्री दीपक शाह द्वारा जिलाधिकारी श्री चर्चित गौड़ के समक्ष एक शिकायत प्रस्तुत की गई। शिकायत में अवगत कराया गया कि एक राजस्व निरीक्षक का रिश्वत लेते हुए वीडियो सोशल मीडिया पर व्यापक रूप से प्रसारित हो रहा है, तथा संबंधित के विरुद्ध अब तक कोई प्रभावी कार्रवाई नहीं की गई है। जिलाधिकारी शिकायत को अत्यंत गंभीरता से लेते हुए तत्काल मामले का संज्ञान लिया। प्रथम दृष्टया उपलब्ध तथ्यों के आधार पर सम्पूर्ण समाधान दिवस के दौरान ही राजस्व निरीक्षक श्री अखिलेश कुमार शुक्ला को जिलाधिकारी ने तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिए तथा प्रकरण की विस्तृत जांच के निर्देश भी दिए गए। इस अवसर पर जिलाधिकारी ने स्पष्ट रूप से कहा कि जनपद में भ्रष्टाचार, अनियमितता एवं कर्तव्यों के प्रति लापरवाही किसी भी दशा में स्वीकार नहीं की जाएगी। उन्होंने कहा कि शासन की मंशा के अनुरूप पारदर्शी एवं जवाबदेह प्रशासन स्थापित करना सर्वोच्च प्राथमिकता है। यदि किसी भी अधिकारी या कर्मचारी के विरुद्ध भ्रष्टाचार अथवा अनुचित आचरण की शिकायत प्राप्त होती है और जांच में आरोप सत्य पाए जाते हैं, तो संबंधित के विरुद्ध कठोर एवं नियमानुसार कार्रवाई सुनिश्चित की जाएगी। सम्पूर्ण समाधान दिवस के दौरान जिलाधिकारी के समक्ष सामुदायिक स्वस्थ केंद्र दुद्धी में महिला चिकित्सक न होने के शिकायत प्राप्त हुई जिसपर जिलाधिकारी ने तात्कालिक प्रभाव से संज्ञान में लेकर डॉ0 पल्लवी सिन्हा, महिला चिकित्साधिकारी सामु0स्वा0केन्द्र, म्योरपुर को सप्ताह में दो दिन के लिए सामु0स्वा0केन्द्र, दुद्धी पर कार्य करने हेतु आदेशित किए। इस दौरान जिलाधिकारी ने सम्बन्धित अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि शिकायतों के निस्तारण के बाद शिकायतकर्ताओं का फीडबैक लेते हुए शिकायतों का निस्तारण किया जाये, जिससे कि शिकायतकर्ता को किसी प्रकार की समस्या न हो और उनके प्रकरण का निस्तारण समय से किया जा सके। उन्होने कहा कि प्रत्येक प्रकरण को गम्भीरता से लेकर जॉच कर निस्तारण आख्या प्रस्तुत की जाये। सम्पूर्ण समाधान दिवस के मौके पर जिलाधिकारी श्री चर्चित गौड़, अपर पुलिस अधीक्षक (आपरेशन) उप जिलाधिकारी दुद्धी श्री निखिल यादव ने 101 शिकायतें सुनते हुए, मौके पर ही 01 मामलें निस्तारित किये गये इस प्रकार तहसील दिवस दुद्धी में कुल 10 मामले निस्तारित हुए, बाकी 91 प्रकरणों को समयबद्ध तरीके से निस्तारित करने के निर्देश सम्बन्धित को दिये गये। इस मौके पर तहसीलदार दुद्धी, नायब तहसीलदार सहित अन्य अधिकारीगण उपस्थित रहें। 02- सम्पूर्ण समाधान दिवस रावर्टसगंज में उप जिलाधिकारी श्री अश्वनी कुमार की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ, इस मौके पर तहसील में आये शिकायतकर्ताओं की शिकायतों का निस्तारण किया गया, इस दौरान क्षेत्रों में भी टीम भेजकर प्रकरणों का निस्तारण कराया गया और सम्बन्धित को निर्देशित भी किया गया कि इसमें किसी प्रकार की लापरवाही न बरती जाये। अवशेष मामलों को गुणवत्तापूर्ण व समयबद्ध तरीके से निस्तारण के लिए अधिकारियों को निर्देशित किया गया। इस मौके पर उप जिलाधिकारी ओबरा श्री विवेक कुमार सिंह व तहसीलदार ओबरा आदि ने 108 शिकायतों को सुनते हुए ,मौके पर ही 09 मामलें निस्तारित किये गये, 03 टीम क्षेत्र में भेज कर टीम द्वारा 03 निस्तारण किया गया, इस प्रकार तहसील दिवस ओबरा में कुल 12 मामले निस्तारित हुए, बाकी 96 प्रकरणों को समयबद्ध तरीके से निस्तारित करने के निर्देश सम्बन्धित को दिये गये। 04-सम्पूर्ण समाधान दिवस घोरावल का आयोजन उप जिलाधिकारी श्री अशीष कुमार त्रिपाठी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ, इस मौके पर तहसील दिवस में आये शिकायतकर्ताओं की शिकायतों का निस्तारण किया गया अवशेष मामलों को गुणवत्तापूर्ण व समयबद्ध तरीके से निस्तारण के लिए अधिकारियों को निर्देशित किया गया। इस मौके पर उप जिलाधिकारी घोरावल श्री अशीष कुमार त्रिपाठी, तहसीलदार घोरावल आदि ने 86 शिकायतें सुनते हुए, मौके पर ही 06 मामलें निस्तारित किये गये और बाकी 80 प्रार्थना पत्रों को समयबद्ध और गुणवत्ता पूर्ण निस्तारण के लिए निर्देश सम्बन्धित को दिये गये। चारों तहसीलों में आयोजित सम्पूर्ण समाधान दिवस में कुल शिकायतें-330 प्राप्त हुयी, जिसमें से 33 शिकायतों का निस्तारण टीम भेजकर और मौके पर किया गया।

NAINI INDUSTRIAL TRAINING CENTRE
(Govt. Affiliated, Star Graded, Record Holder, ISO Certified Training Centre)
सर्टिफिकेट इन फायर सेफ्टी एण्ड इण्डस्ट्रीयल सिक्योरिटी
फायर सेफ्टी पर जिसकी कमाण्ड, उसकी ही है ग्लोबल डिमाण्ड
कोर्स के बाद सेफ्टी सुपरवाइजर, फायर प्रोटेक्शन, सिक्योरिटी एडमिनिस्ट्रेटर आदि विभिन्न पदों पर नियुक्ति मिल जाती है। रिलीफ एजेन्सी N.G.O., डिफेन्स सर्विसेज फायर सर्विस आर्डिनेन्स फैक्ट्री, महानगर पालिका, नगर निगम, एयरपोर्ट, पावर प्लांट, स्टील प्लान्ट, माइनिंग इन्डस्ट्रीज, पेट्रोलियम कम्पनी, फूड इण्डस्ट्रीज, रिफाइनरीज, टेक्सटाइल मिल, टावर कम्पनी, इलेक्ट्रानिक कम्पनी, कोयले की खदानों एवं जहाजों आदि क्षेत्रों में फायर सेफ्टी के जानकारों को बहुत अधिक मौका मिलता है

नोटः फायर सेफ्टी कोर्स करें और देश -विदेश, सरकारी और प्राइवेट क्षेत्रों में अच्छे पैकेज के साथ नौकरी पायें।
Visit us at www.nainiiti.com Call: 9415608710, 7459860480
Enjoy Publicity

क्या डायबिटीज में आम खा सकते हैं,क्या हैं आम के फायदे/नुकसान, जानें हर सवाल का जवाब

नयी दिल्ली। आम को 'फलों का राजा' कहा जाता है। इसके मीठे-रसीले स्वाद और फायदों के कारण इसे यह पहचान मिली है। यह गर्मियों का सुपरफूड है। हालांकि, लोगों में यह कन्फ्यूजन रहता है कि हाई कैलोरी होने के कारण वेट लॉस के दौरान इसे खाना चाहिए या नहीं। साल 2025 में 'फूड एंड फंक्शन' जर्नल में एक लिटरेचर रिव्यू पब्लिश हुआ। इसके मुताबिक, आम वेट कंट्रोल करने में मददगार होता है। दरअसल, आम खाने से तृप्ति (पेट भरा होने का एहसास) महसूस होती है। 'रिसर्चगेट' के मुताबिक, भारत दुनिया का सबसे बड़ा आम उत्पादक देश है। यहां दुनिया का 41फीसदी

आम पैदा होता है। इसलिए आज 'जरूरत की खबर' में जानेंगे कि- आम खाने के क्या फायदे हैं? इसे खाने का सही तरीका क्या है? किन लोगों के आम नहीं खाने चाहिए? विषय को समझेंगे एक्सपर्टः डॉ. अनु अग्रवाल, सीनियर क्लीनिकल डाइटीशियन, फाउंडर- 'वनडाइडटुडे' जी के साथ सवाल जवाब के माधयम से। सवाल- आम में कौन-कौन से पोषक तत्व होते हैं? जवाब- 100 ग्राम आम में लगभग 60 कैलोरी होती हैं। इसका ज्यादातर हिस्सा पानी होता है। इसमें प्रोटीन, कार्ब्स और फाइबर भी होता है। इसमें और भी कई न्यूट्रिशन होते हैं, सवाल- क्या आम इम्यूनिटी बढ़ाता है? जवाब- हां, आम इम्यूनिटी मजबूत करने में कई तरह से मदद करता है।इसमें मौजूद विटामिन सी शरीर के सैनिक यानी 'व्हाइट ब्लड सेल्स' को एक्टिव करता है। इससे शरीर जर्म्स, बैक्टीरिया और वायरस का मजबूती से सामना कर पाता है। विटामिन ए स्किन और म्यूकस लाइनिंग (नाक-गला-आंत) को मजबूत रखता है। इससे जर्म्स स्किन में प्रवेश नहीं कर पाते हैं।सवाल- क्या आम आंखों के लिए फायदेमंद है? जवाब- हां, इसमें विटामिन ए (बीटा-कैरोटीन) भरपूर मात्रा में होता है। पॉइंटर्स से समझिए- यह रेटिना की हेल्थ और नाइट विजन (कम रोशनी में देखने की क्षमता) को सपोर्ट करता है। यह कॉर्निया को हेल्दी रखने में भी मदद करता है। सवाल- क्या आम में एंटीऑक्सिडेंट होते हैं? जवाब- हां, इसमें मैंगिफेरिन, क्वेरसेटिन, कैटेचिन और पॉलीफेनॉल्स जैसे बायोएक्टिव कंपाउंड होते हैं। ये शरीर में बनने वाले फ्री-रेडिकल्स को कम करके ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस से बचाते हैं। कैंसर जैसी घातक बीमारियों से भी बचाते हैं। सवाल- क्या आम स्किन और बालों के लिए अच्छा है?जवाब- हां, इसमें विटामिन सी, विटामिन ए और एंटीऑक्सिडेंट्स भरपूर मात्रा में होते हैं। विटामिन सी कोलेजन प्रोडक्शन में मदद करता है।इससे स्किन की इलास्टिसिटी बनी रहती है और स्किन ज्यादा हेल्दी और ग्लोइंग दिखती है।

विटामिन ए स्किन की रिपेयर और ड्राईनेस को कम करने में मदद करते है।इसमें मौजूद एंटीऑक्सिडेंट्स फ्री-रेडिकल डैमेज को कम करके समय से पहले एजिंग के असर (उम्र के साथ चेहर पर होने वाले असर) को धीमा कर सकते हैं।

वहीं बालों की बात करें तो ये पोषक तत्व स्कैल्प हेल्थ को सपोर्ट करते हैं और बालों की जड़ों को मजबूत बनाए रखने में मदद कर सकते हैं। सवाल- क्या आम पाचन सुधारता है? जवाब- हां, इसमें डाइटरी फाइबर होता है। यह बाउल मूवमेंट बढ़ाता है। कब्ज कम करने में मदद करता है। आम में कुछ ऐसे एंजाइम्स भी होते हैं, जो प्रोटीन पचाने में मदद करते हैं। इसमें मौजूद पानी और इलेक्ट्रोलाइट्स डाइजेस्टिव सिस्टम को सपोर्ट करता है। हालांकि, ज्यादा आम खाने से कुछ लोगों को गैस या भारीपन हो सकता है, इसलिए सीमित मात्रा में खाना चाहिए। सवाल- क्या आम एनर्जी बढ़ाता है? जवाब- हां, शरीर को इंस्टेंट एनर्जी देता है। इसमें नेचुरल शुगर जैसे ग्लूकोज, फ्रुक्टोज और सुक्रोज होते हैं। यह जल्दी पचकर शरीर को एनर्जी देते हैं। सवाल- क्या आम गर्मियों में डिहाइड्रेशन से बचाता है? जवाब- हां, इसमें पानी की मात्रा के साथ इलेक्ट्रोलाइट्स भी होते हैं। यह शरीर में फ्लूइड बैलेंस बनाए रखने में मदद करते हैं। सवाल- क्या डाइटिंग कर रहे लोग आम खा सकते हैं? जवाब- हां, लेकिन संतुलित मात्रा में खाना चाहिए। आम में नेचुरल शुगर होती है। इसलिए ज्यादा मात्रा में खाने से वेट लॉस में समस्या हो सकती है। सवाल- क्या आम वजन घटाने में मददगार है? जवाब- आम सीधे तौर पर वेट लॉस 'फूड' नहीं है, लेकिन यह संतुलित मात्रा में खाया जाए तो वेट कंट्रोल प्लान में शामिल किया जा सकता है। इसमें फाइबर होता है। फाइबर से पेट लंबे समय तक भरा रहता है। इससे भूख कम लगती है और अनहेल्दी स्नैक्स खाने की आदत पर काबू पाया जा सकता है। सवाल- क्या रात में आम खाना सही है? जवाब- नहीं, आम धीरे पचता है। कुछ लोगों में भारीपन, गैस या ब्लड शुगर स्पाइक का कारण बन सकता है। सवाल- क्या एक्सरसाइज के बाद आम खा सकते हैं? जवाब- हां, इसमें मौजूद नेचुरल शुगर (ग्लूकोज और फ्रुक्टोज) वर्कआउट के बाद कम हुई एनर्जी को जल्दी रीफिल करने में मदद करते हैं। इसमें मौजूद पोटेशियम मसल्स रिकवरी और इलेक्ट्रोलाइट बैलेंस में भी मदद करता है।सवाल- क्या डायबिटिक लोग आम खा सकते हैं? जवाब- हां, लेकिन सीमित मात्रा में खाना चाहिए। आम का ग्लाइसेमिक इंडेक्स (जीआई) मीडियम होता है, जिससे ब्लड शुगर बहुत तेजी से नहीं बढ़ता है। डायबिटिक लोग डॉक्टर की सलाह लेकर इसे सीमित मात्रा में खा सकते हैं। सवाल- आम का ग्लाइसेमिक इंडेक्स कितना होता है? जवाब- आम का ग्लाइसेमिक इंडेक्स (जीआई) आमतौर पर मीडियम होता है। सामान्य तौर पर इसका जीआई लगभग 51 से 60 के बीच होता है। यह आम की किस्म, मिठास और मात्रा पर थोड़ा बदल सकता है। सवाल- डायबिटिक लोगों के लिए जूस, शेक और पूरे आम में क्या बेहतर है? जवाब- सबसे सेफ तरीका ये है कि पूरा फल खाएं। दरअसल, इसमें फाइबर होता है, जो शुगर के एब्जॉर्प्शन को धीमा करता है। इससे ब्लड शुगर अचानक नहीं बढ़ता। सवाल- क्या डायबिटिक लोग कच्चा आम खा सकते हैं? जवाब- हां, इसमें शुगर कम और फाइबर ज्यादा होता है। इससे ब्लड शुगर स्पाइक का रिस्क कम होता है। आम से जुड़े कॉमन सवाल-जवाब। सवाल- आम खाने का सही तरीका क्या है? जवाब- सही तरीके से आम खाना सेहत दोनों के लिए फायदेमंद है। सवाल- क्या खाली पेट आम खाना ठीक है? जवाब- हां, खाली पेट आम खाना आमतौर पर नुकसानदायक नहीं है। लेकिन कुछ लोगों का ब्लड शुगर स्पाइक कर सकता है या एसिडिटी हो सकती है। इसलिए बेहतर है कि इसे हल्का नाश्ता करने या भोजन के बाद खाएं। सवाल- क्या आम खाने से पहले भिगोना जरूरी है? जवाब- हां, भिगोने से आम की सतह पर मौजूद कुछ केमिकल अवशेष (जैसे वैक्स या कीटनाशक) कम हो सकते हैं। सवाल- क्या दूध के साथ आम खाना सही है? जवाब- आम और दूध साथ लेना (मिल्कशेक) आमतौर पर सेफ है। यह हाई कैलोरी ड्रिंक है और एनर्जी बूस्ट करती है। लेकिन कुछ लोगों में यह पाचन संबंधी समस्याएं पैदा कर सकती है, क्योंकि दूध और आम दोनों की डाइजेशन स्पीड अलग होती है। सवाल- आम के साथ कौन-सी चीजें नहीं खानी चाहिए? जवाब- गलत फूड कॉम्बिनेशन पाचन को प्रभावित कर सकते हैं। सवाल- क्या ज्यादा आम खाने से गर्मी बढ़ती है? जवाब- आयुर्वेद के मुताबिक, आम की तासीर गर्म होती है। हालांकि, मेडिकल साइंस इसे नहीं मानता है। ज्यादा मात्रा में खाने से डाइजेशन पर दबाव बढ़ सकता है, जसिसे एसिडिटी, मुंह में छाले या गर्मी जैसा एहसास हो सकता है। सवाल- ज्यादा आम खाने से क्या नुकसान होता है? जवाब- आम सेहत के लिए फायदेमंद है, लेकिन इसके कुछ साइड इफेक्ट भी हो सकते हैं। सवाल- क्या आम मुंहासे बढ़ा सकते हैं? जवाब- हां, इसमें मौजूद नेचुरल शुगर और हाई ग्लाइसेमिक लोड कुछ लोगों में हॉर्मोनल बदलाव या सीबम प्रोडक्शन बढ़ाकर एक्ने को ट्रिगर कर सकते हैं। सवाल- क्या इससे ब्लोटिंग या गैस हो सकती है? जवाब- हां, इसमें नेचुरल शुगर और फाइबर होता है।इसके कारण सेंसेटिव डाइजेस्टिव सिस्टम में फर्मेंटेशन से गैस बन सकती है।

प्रज्ञानानंदा नॉर्वे चेस खिताब जीतने वाले पहले भारतीय बने,फाइनल राउंड में जर्मनी के विन्सेंट को हराया

वर्ल्ड नंबर-1 कार्लसन को दो बार मात दी

ओस्लो। भारत के युवा ग्रैंडमास्टर आर. प्रज्ञानानंदा ने इतिहास रचते हुए नॉर्वे चेस 2026 का खिताब जीत लिया है। 20 साल के प्रज्ञानानंदा इस टूर्नामेंट को जीतने वाले पहले भारतीय खिलाड़ी बन गए हैं। फाइनल राउंड में उन्होंने जर्मनी के विन्सेंट कीमर को हराकर यह

उपलब्धि हासिल की। टूर्नामेंट के आखिरी दिन प्रज्ञानानंदा 15 अंकों के साथ तीसरे स्थान पर थे। उन्होंने क्लासिकल मुकाबला जीतकर 3 अंक हासिल किए और कुल 18 अंकों के साथ खिताब अपने नाम कर लिया। नॉर्वे चेस टूर्नामेंट को सबसे ज्यादा 7 बार मैग्नस कार्लसन ने जीता। 2025 में भी वही चैंपियन थे। आखिरी राउंड में पलटी बाजी, वेस्ली टाईब्रेकर

जीतने के बावजूद हारे- टूर्नामेंट के आखिरी राउंड में अमेरिकी ग्रैंडमास्टर वेस्ली सो 15.5 अंकों के साथ टॉप पर थे। लेकिन उनका मुकाबला ड्रॉ रहा और फैसला आर्मागेडन टाईब्रेकर में गया। इससे प्रज्ञानानंदा के लिए खिताब जीतने का रास्ता खुल गया। वेस्ली सो ने टाईब्रेकर तो जीत लिया, लेकिन उन्हें केवल 1.5 अंक मिले। इस तरह उनके कुल 17 अंक हुए, जो प्रज्ञानानंदा से एक कम थे। फ्रांस के अलीरजा फिरोजा 15.5 अंकों के साथ तीसरे स्थान पर रहे। आखिरी दौर में मैग्नस कार्लसन ने गुकेश को हराया, लेकिन वह भी खिताब नहीं जीत सके। कार्लसन 13 अंकों के साथ 5वें स्थान पर रहे।

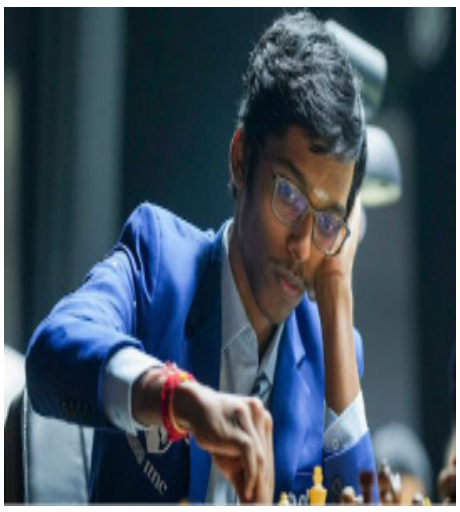

प्रज्ञानानंदा ने वर्ल्ड नंबर-1 कार्लसन को दो बार हराया-इस टूर्नामेंट के शुरुआती दौर में प्रज्ञानानंदा का प्रदर्शन साधारण रहा, लेकिन बाद के मुकाबलों में उन्होंने शानदार वापसी की। उनकी सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक वर्ल्ड नंबर-1 और सात बार के नॉर्वे चेस चैंपियन मैग्नस कार्लसन को दो बार क्लासिकल मुकाबलों में हराना रहा। प्रज्ञानानंदा भारत के दूसरे ऐसे खिलाड़ी बने, जिन्होंने एक ही टूर्नामेंट में मैग्नस कार्लसन को दो बार हराया।

इससे पहले 2007 में विश्वनाथन आनंद ने लिनारेस इंटरनेशनल टूर्नामेंट में कार्लसन को लगातार दो मुकाबलों में शिकस्त दी थी।

आनंद और गुकेश भी नहीं जीत सके थे नॉर्वे चेस खिताब- प्रज्ञानानंदा ने वह कर दिखाया जो भारतीय शतरंज के दिग्गज विश्वनाथन आनंद भी नहीं कर पाए थे। मौजूदा विश्व चैंपियन डी. गुकेश भी अब तक यह टूर्नामेंट नहीं जीत सके हैं। 2013 में शुरू हुए इस टूर्नामेंट में पहली बार किसी भारतीय ने खिताब जीता है। प्रज्ञानानंदा दूसरी बार नॉर्वे चेस में खेल रहे थे। गुकेश 8 अंकों के साथ छठे (आखरी) स्थान पर रहे। महिलाओं में कजाकिस्तान की बिबिसारा जीती-वहीं, महिलाओं में कजाकिस्तान की बिबिसारा आसाउबायेवा 16.5 अंक के साथ विजेता रही। जबकि चीन की झू जिनेर दूसरे और यूक्रेन की अन्नामुजीचुक 15 पॉइंट के साथ तीसरे स्थान पर रही। जबकि भारत की दिव्या देशमुख पांचवे और कोनेरु हम्पी छठे स्थान पर रही। क्या है नॉर्वे चेस का अर्मागेडन फॉर्मेट? नॉर्वे चेस टूर्नामेंट हर साल होने वाले दुनिया के सबसे प्रतिष्ठित और रोमांचक चेस टूर्नामेंट्स में से एक है। इस साल यह टूर्नामेंट 25 मई से 5 जून 2026 तक पहली बार नॉर्वे की राजधानी, ओस्लो में आयोजित किया गया था।इसमें ओपन और महिला कैटेगरी, दोनों में केवल 6-6 खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया था, जो आपस में दो-दो बार भिड़े। अगर दो खिलाड़ियों के बीच क्लासिकल मैच ड्रॉ होता है तो फैसला सडन-डेथ (अर्मागेडन) गेम से किया जाता है। इसमें सफेद मोहरों वाले खिलाड़ी को ज्यादा समय मिलता है, लेकिन उसे हर हाल में जीतना होता है। मुकाबला ड्रॉ होने पर काले मोहरों वाले खिलाड़ी को विजेता मानकर एक्स्ट्रा पॉइंट दिया जाता है। इससे हर दौर में नतीजा निकलना तय होता है। चेस में क्लासिकल फॉर्मेट क्या है? रैपिड, ब्लिट्ज और क्लासिकल ये चेस के फॉर्मेट हैं। क्लासिकल गेम यानी खिलाड़ी को 90 मिनट के अंदर शुरुआती 40 चालें चलनी होती हैं। एक गेम जीतने पर एक अंक मिलता हैं, जबकि ड्रॉ की स्थिति में प्रत्येक खिलाड़ी को आधा अंक दिया जाता है। 2 क्लासिकल गेम के बाद ज्यादा अंक वाले प्लेयर को विजेता घोषित कर दिया जाता है। 2 क्लासिकल गेम के बाद भी बराबर अंक होने पर विजेता का फैसला रैपिड राउंड से होता है। रैपिड राउंड में 15-15 मिनट के चार गेम होते हैं। इसमें भी हर गेम जीतने पर एक अंक और बराबरी की स्थिति में आधा अंक दिया जाता है। रैपिड राउंड से भी अगर चैंपियन का फैसला नहीं होता है, तो ब्लिट्ज चेस खेला जाता है। ब्लिट्ज फॉर्मेट में 3-3 मिनट का गेम होता है। जो खिलाड़ी इसमें जीत हासिल कर लेता है उसे चैंपियन घोषित कर दिया जाता है। रैपिड फॉर्मेट में प्रत्येक खिलाड़ी को 10 से 60 मिनट के अंदर और ब्लिट्ज में सभी चालें प्रत्येक खिलाड़ी को 10 मिनट या उससे कम के निश्चित समय में पूरी करनी चाहिए।

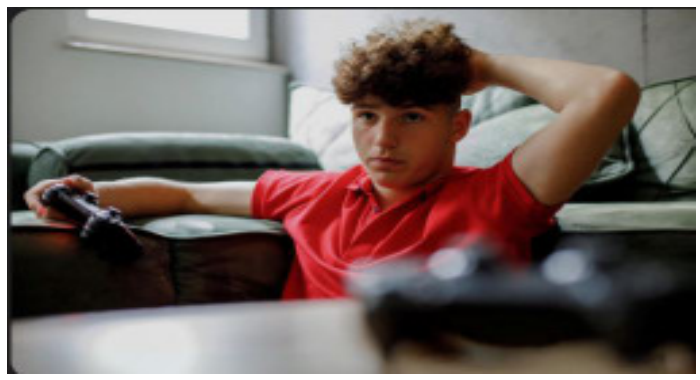

रोज 6-7 घंटे वीडियो गेम खेलता हूं,जानता हूं ये लत मेरी जिंदगी खराब कर रही है, लेकिन छोड़ नहीं पा रहा, मैं क्या करूं

नयी दिल्ली। आज के समय में स्क्रीन टाइम बढ़ गया हैं सिर्फ कम उम्र लोग ही नहीं हर किसी को मोबाइल से जुडी कोई न कोई लत लग्न आम बात हो गयी हैं इन्ही विषयों को समझेंगे एक्सपर्ट- डॉ. द्रोण शर्मा, कंसल्टेंट साइकेट्रिस्ट, आयरलैंड, यूके। यूके, आयरिश और जिब्राल्टर मेडिकल काउंसिल के मेंबर, जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से। सवाल- मैं 21 साल

का कॉलेज स्टूडेंट हूं। पिछले दो साल से ऑनलाइन गेमिंग में बहुत ज्यादा इन्वॉल्व हो गया हूं। शुरू में सिर्फ फन और टाइमपास के लिए खेलता था, लेकिन अब ऐसी लत हो गई है कि रोज 6-7 घंटे गेम खेलता हूं। कई बार पूरी रात जागकर भी। इससे मेरी पढ़ाई पर बुरा असर पड़ा है, मेरे मार्क्स गिर गए हैं और मैं क्लासेस भी मिस करने लगा हूं। इस कारण घरवालों से भी लड़ाई होती रहती है। मैं समझता हूं कि ये गलत है, लेकिन जब गेम नहीं खेलता तो चिड़चिड़ापन महसूस होता है। मेरी सोशल लाइफ भी लगभग खत्म हो गई है। इस लत से बाहर कैसे निकलूं? 21 साल की उम्र में ऑनलाइन गेम खेलना सामान्य बात है, लेकिन जब गेमिंग आपकी पढ़ाई, नींद, रिश्तों और मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने लगे तो इसे गंभीरता से लेने की जरूरत है। आपके द्वारा बताए गए संकेत- जैसे रोज 6-7 घंटे गेम खेलना, पूरी रात जागना, पढ़ाई में गिरावट, क्लास मिस करना, परिवार से झगड़े, सोशल लाइफ का खत्म होना और गेम न खेलने पर चिड़चिड़ापन- दर्शाते हैं कि यह सिर्फ मनोरंजन नहीं रह गया है। मनोविज्ञान में इसे प्रॉब्लमैटिक गेमिंग या कुछ मामलों में गेमिंग डिसऑर्डर कहा जाता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्लूएचओ) के आईसीडी-11 वर्गीकरण के अनुसार गेमिंग डिसऑर्डर की तीन प्रमुख पहचान हैं– गेमिंग पर नियंत्रण कम होना। पढ़ाई, परिवार, नींद और सामाजिक जिम्मेदारियों की तुलना में गेमिंग को ज्यादा महत्व देना। नुकसान के बावजूद गेमिंग जारी रखना। आपके केस में ये तीनों संकेत दिखाई दे रहे हैं। रोज 6-7 घंटे से ज्यादा खेलना। टाइम पर कंट्रोल खत्म होना। पढ़ाई पर नेगेटिव प्रभाव पड़ना। जरूरी काम छोड़कर गेम खेलना। सोशल लाइफ से कटते जाना। गेम के लिए क्लास बंक करना। नींद खराब होना / रात भर जागना। नुकसान के बावजूद के गेमिंग जारी रखना। साइकोलॉजी क्या कहती है? इन गेम्स को कुछ इस तरह डिजाइन किया जाता है कि वे दिमाग के 'रिवॉर्ड सिस्टम' को एक्टिवेट करें। जब आप कोई लेवल जीतते हैं, कोई मिशन पूरा करते हैं या आपकी रैंक बढ़ती है, तो दिमाग में डोपामिन रिलीज होता है। इससे अच्छा महसूस होता है और दिमाग बार-बार उसी अनुभव को दोहराना चाहता है। इस तरह धीरे-धीरे- गेम खेलने की इच्छा बढ़ती जाती है। पहले जितना मजा पाने के लिए ज्यादा समय खेलना पड़ता है। गेम न खेलने पर बेचैनी महसूस होती है। पढ़ाई, रिश्ते और दूसरी जिम्मेदारियां पीछे छूटने लगते हैं।हमारा ब्रेन और डोपामिन का रिवॉर्ड सर्किट-ऑनलाइन गेमिंग केवल मनोरंजन नहीं है। यह हमारे दिमाग के रिवॉर्ड सिस्टम को भी प्रभावित करती है। हर नई जीत, नया लेवल, बैज, रैंक या टीम की तारीफ दिमाग को एक छोटा-सा इनाम देती है। इस प्रक्रिया में डोपामिन नाम का न्यूरोकेमिकल महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। डोपामिन सिर्फ खुशी महसूस नहीं कराता, बल्कि दिमाग को यह भी सिखाता है कि कौन-सी चीज दोबारा करने लायक है। गेम्स में इनाम जल्दी और बार-बार मिलते हैं। इसलिए दिमाग धीरे-धीरे गेमिंग को एक हाई-रिवॉर्ड गतिविधि के रूप में पहचानने लगता है। मोबाइल की घंटी, गेम का नोटिफिकेशन, ऑनलाइन दोस्तों का मैसेज या 'बस एक और मैच' जैसे संकेत भी गेम खेलने की इच्छा जगाने लगते हैं। समय के साथ दिमाग पढ़ाई, व्यायाम, नींद या परिवार के साथ समय बिताने जैसी सामान्य गतिविधियों से ज्यादा रोमांचक और जरूरी गेमिंग को मानने लगता है। उसे समझ में भी आता है कि ये नुकसानदायक है, लेकिन वो चाहकर भी वो अपनी आदत को कंट्रोल नहीं कर पाता। दूसरे शब्दों में कहें तो इच्छाशक्ति की कमी नहीं होती। दिमाग का रिवॉर्ड सिस्टम ही गेमिंग को असामान्य रूप से ज्यादा महत्व देने लगता है। गेम न खेलने पर चिड़चिड़ापन क्यों होता है? अगर कोई व्यक्ति लंबे समय से रोज घंटों गेम खेल रहा है, तो उसका दिमाग उस लगातार मिलने वाले रोमांच और रिवॉर्ड का आदी हो सकता है। ऐसे में जब अचानक गेमिंग कम कर दी जाए या रोक दी जाए, तो दिमाग को वही उत्तेजना नहीं मिलती, जिसकी उसे आदत पड़ चुकी होती है। नतीजा यह होता है कि व्यक्ति चिड़चिड़ा, बेचैन या उदास महसूस कर सकता है। कुछ लोगों को गुस्सा ज्यादा आता है, किसी काम में मन नहीं लगता या हर समय खालीपन-सा महसूस होता है। अब यहां पर कुछ बातें गौर करने वाली हैं- इसे केवल 'गेम खेलने की जिद' समझना सही नहीं है। यह दिमाग और भावनाओं की एक स्वाभाविक प्रतिक्रिया है। ये तब दिखाई देती है, जब कोई व्यक्ति अपनी पसंदीदा गतिविधि से दूर रहने की कोशिश करता है। एक्सपर्ट मानते हैं कि गेम न खेल पाने पर बार-बार चिड़चिड़ापन, बेचैनी या उदासी महसूस होने का मतलब है कि अब गेम सिर्फ मनोरंजन नहीं रह गया है। आप गेम को नहीं, गेम आपको कंट्रोल कर रहा है। इसलिए ऐसे लक्षणों को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। क्या गेम आपको कंट्रोल कर रहा है? करें सेल्फ एसेसमेंट टेस्ट-यहां मैं आपको एक सेल्फ एसेसमेंट टेस्ट दे रहा हूं। नीचे ग्राफिक्स में कुल 10 सवाल हैं। आपको इन सवालों को 0 से 3 के स्केल पर रेट करना है। जैसेकि पहले सवाल के लिए अगर आपका जवाब 'कभी नहीं' है तो 0 नंबर दें और अगर आपका जवाब 'लगभग रोज' है तो 3 नंबर दें। अंत में अपने टोटल स्कोर की एनालिसिस करें। स्कोर का इंटरप्रिटेशन भी ग्राफिक में दिया है। कॉग्निटिव बिहेवियर थेरेपी (सीबीटी) पर बेस्ड सेल्फ हेल्प प्लान-1. गेमिंग डायरी बनाएं- अचानक छोड़ने की बजाय ये आदत धीरे-धीरे कम करें। कई लोग एकदम गेम छोड़ने की कोशिश करते हैं और फिर दोबारा उसी पैटर्न में लौट जाते हैं। बेहतरी तरीका ये है कि आप एक गेमिंग डायरी बनाएं। उसमें सात दिनों तक यह लिखें– कब गेम खेला? उससे पहले मनःस्थिति कैसी थी? उस समय मन में क्या विचार आया? गेम खेलने की इच्छा कितनी तीव्र थी? कितनी देर गेम खेला? 2. अपने गेमिंग ट्रिगर्स पहचानें-खुद से ये सवाल पूछेंःमैं कब सबसे ज्यादा गेम खेलता हूं? बोर होने पर? तनाव होने पर? अकेलापन महसूस होने पर? परीक्षा का दबाव महसूस होने पर? पढ़ाई से बचने के लिए? देर रात जागने पर? ऑनलाइन दोस्तों का दबाव में? अक्सर गेमिंग असली समस्या नहीं होती, बल्कि यह किसी भावनात्मक जरूरत को पूरा करने का जरिया बन जाती है। अपने ट्रिगर्स को पहचानने पर पैटर्न को समझने में मदद मिलेगी। ये भी समझ आएगा कि आपका ट्रिगर क्या है। 3. गेमिंग अचानक पूरी तरह बंद न करें-यदि आप रोज 6-7 घंटे गेम खेलते हैं, तो एकदम से बंद करने पर चिड़चिड़ापन बढ़ सकता है। बेहतर होगा कि इसे धीरे-धीरे समय कम किया जाए। पहला सप्ताहः रोज अधिकतम 4 घंटे, रात 11 बजे के बाद गेमिंग नहीं। दूसरा सप्ताहः रोज अधिकतम 3 घंटे, सप्ताह में एक पूरी शाम बिना गेमिंग के। तीसरा सप्ताहः रोज अधिकतम 2 घंटे, पढ़ाई पूरी होने के बाद ही गेमिंग। चौथा सप्ताहः वीक में 60-90 मिनट, वीकेंड में अधिकतम 2 घंटे। 4. इच्छा की लहर को गुजरने दें जब गेम खेलने की तीव्र इच्छा हो, तो तुरंत गेम शुरू न करें। इसकी बजाय ये काम करें- कुछ मिनट गहरी सांस लें। इच्छा की तीव्रता को 0 से 10 के पैमाने पर अंक दें। खुद से कहें, 'यह केवल इच्छा है, कोई आदेश नहीं।' इसके बाद 20 मिनट तक कुछ दूसरे काम करें, जैसे- टहलना, स्नान करना, व्यायाम करना, किसी दोस्त से बात करना, नोट्स व्यवस्थित करना- अक्सर यह तीव्र इच्छा 15-30 मिनट में अपने-आप कम होने लगती है। 5. अपने विचारों को चुनौती दें-फीलिंगः 'बस एक गेम खेलूंगा।' विचारः 'मेरे लिए एक गेम अक्सर तीन घंटे में बदल जाता है।' फीलिंगः 'मेरा मूड खराब है।' विचारः 'पहले टहलता हूं, किसी से बात करता हूं या कुछ खा लेता हूं, फिर फैसला करूंगा।' फीलिंगः 'मैं वैसे भी पढ़ाई में पीछे हूं।' विचारः '30 मिनट की पढ़ाई भी शून्य से बेहतर है।' फीलिंगः 'दोस्त इंतजार कर रहे हैं।' विचारः 'मेरी पढ़ाई और भविष्य की जिम्मेदारी मेरी है।' 6. खाली समय को रिप्लेस करें-सिर्फ गेम हटाने, कम करने से काम नहीं चलेगा। आखिर दिमाग को दूसरा रिवॉर्ड चाहिए। इसलिए गेम की जगह कुछ दूसरे ऐसे काम करें, जिससे रिवाईं भी मिले और नुकसान भी न हो। जैसे- जिम जाएं। स्पोर्ट्स खेलें। दोस्तों से मिलें। नई स्किल सीखें। म्यूजिक या क्रिएटिव हॉबी अपनाएं। 7. माहौल में बदलाव करें- गेमिंग से जुड़े नोटिफिकेशन बंद करें। रात में मोबाइल या लैपटॉप बेडरूम से बाहर रखें। इंटरनेट के लिए समय-सीमा तय करें। पढ़ाई और गेमिंग की जगह अलग रखें। परीक्षा के दौरान पासवर्ड किसी विश्वसनीय व्यक्ति के पास रख सकते हैं। 8. वास्तविक जीवन के पुरस्कार वापस लाएं-गेमिंग कम करने से शुरुआत में खालीपन महसूस हो सकता है। इसलिए जीवन में दूसरी सकारात्मक गतिविधियों को शामिल करना जरूरी है। जैसे रोज कम-से-कम– पढ़ाई के दो 45 मिनट के सत्र। 20 मिनट का व्यायाम या पैदल चलना। किसी व्यक्ति से आमने-सामने बातचीत। तय समय पर सोना। कोई ऐसी गतिविधि जो स्क्रीन से जुड़ी न हो। 9. परिवार को सहयोगी बनाएं-अपनी यात्रा में परिवार की मदद लें और घरवालों से खुलकर बात करें। उनसे कहें– मुझे लग रहा है कि मैं जरूरत से ज्यादा गेम खेल रहा हूं। मैं इस आदत को कम करना चाहता हूं। मुझे डांट या गुस्से से ज्यादा मदद की जरूरत है। मैं गेमिंग कम करने की कोशिश कर रहा हूं। आप मुझे मेरे तय नियम याद दिला सकते हैं। रात में इंटरनेट बंद रखने में मदद कर सकते हैं। हर हफ्ते मेरी प्रोग्रेस पूछ सकते हैं। अगर मैं गलती करूं, तो मुझे जज करने के बजाय दोबारा कोशिश करने के लिए प्रोत्साहित करें।क्या दवाइयों से मदद मिलती है? फिलहाल गेमिंग डिसऑर्डर के लिए कोई विशेष स्वीकृत दवा उपलब्ध नहीं है। इसके मुख्य ट्रीटमेंट में ये चीजें शामिल हैं– कॉग्निटिव बिहेवियर थेरेपी, स्लीप क्वालिटी में सुधार, रूटीन को रेगुलर करना, परिवार की मदद और सपोर्ट वास्तविक जीवन की गतिविधियों और उपलब्धियों को बढ़ाना। यदि साथ में अवसाद, चिंता या ध्यान संबंधी समस्या मौजूद हो, तो मनोचिकित्सक स्थिति के अनुसार दवाओं पर विचार कर सकते हैं। लेकिन दवाएं कोई त्वरित समाधान नहीं हैं और इन्हें केवल विशेषज्ञ की सलाह पर ही लिया जाना चाहिए। अंतिम बात-यह एक गंभीर समस्या है, लेकिन इससे बाहर निकलना पूरी तरह संभव है। यहां हमारा मकसद खुद को दोष देना नहीं है, बल्कि दोबारा अपने जीवन पर कंट्रोल हासिल करना है। गहरी इच्छा शक्ति और थोड़ी मेहनत से आप ये काम कर सकते हैं।

देश में युवाओं का बढ़ता आक्रोश हमें कुछ बताता है

आज सब तरफ कॉकरोच शब्द की चर्चा है। किन्तु इसके हमारे राजनीतिक शब्दकोश का हिस्सा बनने से बहुत पहले ही मैं इस शब्द का उपयोग करता आ रहा हूं। ईश्वर न करे, लेकिन कल किसी परमाणु विस्फोट में

दुनिया नष्ट हो जाए, तब भी केवल कॉकरोच ही जीवित बचेंगे। एक ग्रेट-सर्वाइवर से राजनीतिक प्रतिरोध के प्रतीक तक, कॉकरोचों ने एक लंबी यात्रा तय की है। कॉकरोच जनता पार्टी या सीजेपी का उदय उस व्यवस्था के प्रति बढ़ते जनाक्रोश को दर्शाता है, जो इतनी खण्डित हो चुकी है कि प्रदर्शनकारियों को लोकतंत्र पर मंडराते खतरों की ओर संकेत करने के लिए एक कीड़े की छवि का सहारा लेना पड़ा है। हम ऐसे समय में जी रहे हैं, जिसमें नेतागण सम्राटों की तरह व्यवहार करने लगे हैं और विपक्ष कोई विश्वसनीय चुनौती पेश नहीं कर पा रहा है। इसी शून्य में कॉकरोच रेंगता हुआ प्रवेश करता है- एक ऐसा प्राणी, जिससे हमें घृणा करना और डरना सिखाया गया है, फिर भी जो हर तरह की विपत्ति के बीच जीवित रहने की क्षमता रखता है। यह तथ्य कि एक अपेक्षाकृत अनजान पोलिटिकल कम्युनिकेशन स्ट्रैटेजिस्ट द्वारा किसी अमेरिकी विश्वविद्यालय में बैठकर शुरू किया गया एक व्यंग्यात्मक आंदोलन अचानक सत्ता गलियारों में बेचैनी पैदा कर दे, अपने आप में बहुत कुछ बताता है। आखिर एक शक्तिशाली राष्ट्र को मुख्य न्यायाधीश की गैर-जरूरी टिप्पणी से उपजे ऑनलाइन-आंदोलन से चिंतित क्यों होना चाहिए? भारत के बेरोजगार युवाओं का मानो उपहास करते हुए मुख्य न्यायाधीश ने अनजाने में एक तीखी प्रतिक्रिया को जन्म दे दिया : क्रोध, अलगाव और व्यंग्य से संचालित एक डिजिटल विद्रोह। तब से लाखों युवा भारतीय इसके इर्द-गिर्द एकजुट हो चुके हैं। इस पूरी घटना को विशेष रूप से दिलचस्प बनाने वाली बात यह है कि सीजेपी वास्तव में कोई राजनीतिक दल नहीं है। उसका न कोई नेता है, न कार्यालय, न कार्यकर्ता-तंत्र, न कोई संगठनात्मक ढांचा। 1.5 अरब की आबादी और असाधारण विविधता वाले इस देश में केवल साइबर-स्पेस में मौजूद एक आंदोलन को सिद्धांततः यथास्थिति के लिए खतरा नहीं होना चाहिए। फिर भी खतरा क्यों महसूस किया जा रहा है? सीजेपी पर विदेशी फंडिंग से संचालित होने का आरोप लगाया जा रहा है। झूठा दावा किया जा रहा है कि उसके अनेक समर्थक पाकिस्तानी हैं। उसके सोशल मीडिया हैंडल्स को ब्लॉक किया जा रहा है। कुछ लोगों ने तो उसे आम आदमी पार्टी का प्रॉक्सी सिद्ध करने की भी कोशिश की। यह सब एक प्रकार की संशयग्रस्त मानसिकता को उजागर करता है। इस घबराहट के पीछे कई कारण हैं। अव्वल तो यही कि यह काफी हद तक नैरेटिव को कंट्रोल करने का दौर है। इस दौर का राजकाज चौबीसों घंटे चलने वाले किसी विज्ञापन-अभियान जैसा प्रतीत होता है : उपलब्धियों का प्रचार करो, विफलताओं को दबा दो, नारे बदलो और आगे बढ़ जाओ। करोड़ों नौकरियां जिनका वादा किया गया था नहीं मिलीं, किसानों की आय दोगुनी नहीं हुई, पेपर लीक लगातार जारी हैं- लेकिन नैरेटिव-प्रबंधन यह सुनिश्चित करता है कि आम धारणा, प्रदर्शन पर भारी पड़े। ऐसे में यह चीज़ परेशान करने वाली लग सकती है कि इंटरनेट के ये कॉकरोच किसी लिखी हुई पटकथा का पालन करने से इंकार कर रहे हैं। दूसरे, युवाओं का आक्रोश चुनावी दृष्टि से महत्व रखता है। ऊंची जीडीपी वृद्धि के आंकड़ों और उग्र राष्ट्रवाद के शोर के पीछे एक ऐसी पीढ़ी मौजूद है, जो गहरी असुरक्षा से जूझ रही है। लाखों शिक्षित युवा रोजगार के घटते अवसरों, परीक्षाओं के बढ़ते दबावों और ऐसी अर्थव्यवस्था का सामना कर रहे हैं, जहां स्थायी नौकरी पाना लगातार दूर की कौड़ी बनता जा रहा है। बहुतों के लिए यह निराशा अब चिरस्थायी हो चुकी है। उन्हें लगता है कि राजनेता उन्हें केवल चुनावों के समय ही देखते हैं और केवल तभी सुनते हैं, जब वे विरोध-प्रदर्शन करते हैं। यह आक्रोश केवल वैचारिक ही नहीं है, यह कई मायनों में व्यक्तिगत भी है।

यह हालिया चुनावों में भी स्पष्ट दिखाई दिया, विशेषकर तमिलनाडु में, जहां विजय की लोकप्रियता ने पारम्परिक राजनीति से तंग आ चुके युवा मतदाताओं को बड़े पैमाने पर आकर्षित किया। पूरे भारत में युवा मतदाता अब पुराने और जड़ राजनीतिक विचारों को लगातार अस्वीकार कर रहे हैं। वे ताजगी, प्रामाणिकता और भावनात्मक जुड़ाव की तलाश में हैं। मीम-संस्कृति उनके प्रतिरोध की भाषा बन चुकी है। और याद रहे कि व्यंग्य हमेशा राजनीतिक हथियार साबित होता है। अधिनायकवादी व्यवस्थाएं हास्य-व्यंग्य के सामने खुद को आश्चर्यजनक रूप से असुरक्षित ही पाती हैं। पूरे भारत में ही युवा मतदाता अब पुराने और जड़ राजनीतिक विचारों को लगातार अस्वीकार कर रहे हैं। वे ताजगी, प्रामाणिकता और भावनात्मक जुड़ाव की तलाश में हैं। मीम-संस्कृति उनके प्रतिरोध की भाषा बनती जा रही है। (ये लेखक वेज अपने विचार हैं,राजदीप सरदेसाई)

क्या आप कामकाजी महिलाओं के दोहरे बोझ को कम करने के बारे में सोच रहे हैं?

शुक्रवार को अधिकांश अंतरराष्ट्रीय अखबारों के पहले पन्ने पर शीर्ष वरीयता प्राप्त जानिक सिनर की तस्वीर छपी

थी, जिन्हें फ्रेंच ओपन जीतने का प्रबल दावेदार माना जा रहा था। लेकिन इसकी वजह यह नहीं थी कि उन्होंने पिछले दिन कोई मैच जीता था, बल्कि यह थी कि वे विश्व रैंकिंग में 56वें स्थान पर मौजूद हुआन मानुएल सीरुन्दोलो से हार गए थे। अधिकांश अखबारों ने उनकी हार का कारण यह बताया कि 'झुलसा देने वाली धूप ने फिलिप-शात्रिये कोर्ट को एक विशाल बैगेट ओवन में बदल दिया था और सिनर की हालत इतनी बिगड़ गई कि उन्हें पहचानना तक मुश्किल हो गया था।' मैच के बाद सिनर ने कहा, 'मुझे याद नहीं आखिरी बार मैं कब इतना कमजोर महसूस कर रहा था। मैं पूरी तरह थक चुका था- मेरा पूरा शरीर जवाब दे रहा था।' अधिकांश समाचार पत्रों और खेल पत्रकारों ने उनकी हार के लिए भीषण गर्मी को ही जिम्मेदार ठहराया। वास्तव में दुनिया के नंबर एक खिलाड़ी तीसरे सेट में जीत से केवल एक गेम दूर थे, और ठीक उसी समय गर्मी ने उनकी सारी ऊर्जा सोख ली। इसे पढ़ते ही मुझे कुछ विश्वविद्यालय प्राध्यापिकाओं और स्कूल शिक्षिकाओं की याद आ गई, जो बताती रहती हैं कि दिनभर का पेशेवर काम पूरा करने के बाद जब वे अपनी 'सेकंड शिफ्ट' करने घर लौटती हैं, तो प्रतिदिन इस दबाव के नीचे निढाल हो जाती हैं और उनकी थकान को समझने या बांटने वाला कोई नहीं होता। और वे बिल्कुल सही थीं। अनेक कंजर्वेटिव या पारंपरिक परिवार गर्व के साथ कामकाजी बहू को स्वीकार तो कर लेते हैं, परंतु इसका प्रमुख कारण अकसर उससे मिलने वाला आर्थिक लाभ या सामाजिक प्रतिष्ठा होता है। लेकिन यह स्वीकृति प्रायः शर्तों के साथ आती है। मूल धारणा यही बनी रहती है कि उसके जॉब को पारंपरिक घरेलू बुनावट या परिवार की सुविधाओं में किसी प्रकार का व्यवधान नहीं डालना चाहिए। समाज और मीडिया द्वारा गढ़े गए सुपरवुमन के मिथक ने आदर्श भारतीय महिला का एक अवास्तविक मानक स्थापित कर दिया है, जो मानो बिना किसी कठिनाई के सब कुछ हासिल कर सकती है। यदि वे सहायता मांगें, घरेलू कामकाज को किसी और से साझा करने का प्रयास करें या अपनी थकान जाहिर करें, तो इसे अकसर उनकी नाकामी या परिवार के प्रति समर्पण की कमी के रूप में देखा जाता है। जिस प्रकार कोई विश्व नंबर एक खिलाड़ी भीषण गर्मी में हमेशा जीत नहीं सकता, उसी प्रकार इन युवा महिलाओं से यह अपेक्षा करना भी अवास्तविक है कि वे एक आधुनिक पेशेवर की तरह आया जैसी घरेलू सहायिकाओं को नियुक्त करके अपनी समय की कमी की समस्या का समाधान करने का प्रयास करती हैं, तो उन्हें अकसर प्रतिरोध या आलोचनात्मक निगरानी का सामना करना पड़ता है। परिवार के सदस्य बाहर के सहायकों द्वारा किए गए कार्य की गुणवत्ता पर सवाल उठा सकते हैं, उसमें अत्यधिक हस्तक्षेप कर सकते हैं, या फिर सूक्ष्म रूप से कामकाजी महिलाओं को यह संकेत देकर उनमें अपराध-बोध पैदा कर सकते हैं कि उनके कारण परिवार उपेक्षित हो रहा है या परायों के हाथ का खाना खा रहा है। दूसरी ओर- विशेषकर उभरते हुए शहरों की टाउनशिप में रहने वाले कुछ वरिष्ठ सदस्य- जो कठोर जेंडर भूमिकाओं वाले युग में बड़े हुए हैं, अकसर उन्हीं पैटर्न्स को आगे बढ़ाते हैं, जिन्हें उन्होंने स्वयं झेला था। यदि सास ने अपने समय में पूरा घर अकेले संभाला था, तो ऐसे परिवारों में नई बहुओं द्वारा काम के बंटवारे की मांग को कभी-कभी अधिकार-बोध या आलस्य के रूप में देखा जाता है। इसके अलावा, परिवार की शक्ति-संरचनाएं भी किसी नई दुल्हन के लिए घरेलू कामकाज की जिम्मेदारियों को सम्भालना बहुत मुश्किल बना देती हैं। जब किसी व्यक्ति से पर्याप्त आराम या सहयोग के बिना दो फुल-टाइम भूमिकाओं में लगातार बेहतरीन प्रदर्शन की अपेक्षा की जाती है, तो उसका परिणाम मानसिक और भावनात्मक थकान के रूप में सामने आता है। ऐसी महिलाएं एक निरंतर 'ऑलवेज़-ऑन' वाली अवस्था में जीती हैं, जहां उन्हें सही मायनों में आराम करने का बहुत कम अवसर मिलता है। उनका मन लगातार एक मानसिक चेकलिस्ट का प्रबंधन करता रहता है- ऑफिस की डेडलाइंस के साथ-साथ घर की जरूरतों- जैसे किराने का सामान, बच्चों की देखभाल और भोजन की योजना। धीरे-धीरे यह स्थिति एक टाइम-डिसीज़ का रूप ले लेती है, जो वस्तुतः इस मनोवैज्ञानिक अनुभूति को दर्शाती है कि समय कभी भी काफी नहीं होता।इसका परिणाम लगातार भाग-दौड़, अत्यधिक सतर्कता और अवकाश के क्षणों में भी आराम न कर पाने के रूप में सामने आता है। कामकाजी महिलाओं पर पड़ने वाले इस दोहरे बोझ को कम करने के लिए घरेलू स्तर पर तत्काल बदलाव, जीवनसाथी का सहयोग और परिवारों के कम्युनिकेट करने के तरीके में परिवर्तन- इन तीनों की आवश्यकता है। फंडा यह है कि जिस प्रकार खेल जगत अपने किसी चैंपियन के पीछे मजबूती से खड़ा होता है, उसी प्रकार हमें भी अपनी बहुओं के पीछे खड़ा होना चाहिए- क्योंकि वे भी हमारी बेटियां ही हैं। एन. रघुरामन

शिक्षित बेटी पूरी अगली पीढ़ी को शिक्षित और आर्थिक रूप से सुरक्षित करती है

लैपटॉप के सामने बैठी गृहिणी स्पष्टतः उत्साह से भरी आवाज में अपने पति को आवाज देती है, 'आशुतोष, हमारा पहला ऑर्डर।' पति स्क्रीन की ओर दौड़ते हैं, जैसे उन्हें सुनी हुई बात पर यकीन न हो। उनके नए चटनी के कारोबार को पहला ऑनलाइन ऑर्डर मिला है। यह दृश्य कल समाप्त हुए आईपीएल के दौरान दिखाए गए लोकप्रिय विज्ञापन 'रेड्डी वर्सेस रिटायरमेंट' का है, जिसमें एक रिटायर्ड कपल एआई की मदद से कारोबार शुरू करता है। यह तकनीक लेबल और पैकेजिंग डिजाइन से लेकर उत्पादों का प्रचार करने वाली वेबसाइट तक बना देती है। यह विज्ञापन मजबूत संदेश देता है कि कुछ नया शुरू करने और परिवार में आर्थिक योगदान देने के लिए कभी बहुत देर नहीं होती। लेकिन आठ साल पहले महाराष्ट्र के बारामती की 30 वर्षीय मनीषा कांबटे के पास लेबल डिजाइन करने और वेबसाइट बनाने का कोई एआई टूल नहीं था। फिर भी उन्होंने मसालों और अचार का ऐसा सफल कारोबार खड़ा किया, जिसने वित्तीय वर्ष 2024-25 में लगभग 1 करोड़ रुपए का कारोबार किया।किसान परिवार में जन्मी मनीषा ने कम उम्र में ही पिता को खो दिया था। इसके बावजूद उन्होंने अच्छे-से पढ़ाई की और दसवीं तक की शिक्षा पूरी की। लेकिन सामाजिक अपेक्षाओं ने उनके लिए दूसरा रास्ता तय कर रखा था। वे अपनी महत्वाकांक्षाओं को आगे बढ़ातीं, इससे पहले ही उनकी शादी हो गई और वे अपने होमटाउन से 322 किलोमीटर दूर पुरंदर चली गईं।नया जीवन 17

सदस्यों वाले एक संयुक्त परिवार में शुरू हुआ, जहां सभी वित्तीय फैसले परिवार के सबसे बड़े सदस्य लेते थे। चाहे 100 रुपए हों या 1 रुपया, हर खर्च के लिए अनुमति जरूरी थी। परिवार के युवा सदस्यों को बहुत कम आर्थिक स्वतंत्रता थी। मनीषा को सबसे ज्यादा दुख तब होता, जब वे अपने स्कूल जाने वाले तीन बच्चों को चॉकलेट या स्नैक्स खरीदने के थोड़े-से पैसे भी नहीं दे पाती थीं। इन्हीं पलों ने उनके भीतर आर्थिक आत्मनिर्भरता हासिल करने का संकल्प मजबूत कर दिया। चूंकि उन्होंने खुद कई अवसर छूटते देखे थे, इसलिए वे चाहती थीं कि उनकी दो बेटियों और बेटे के पास जीवन में बेहतर विकल्प हों। अनेक ग्रामीण परिवारों की तरह उनका परिवार भी मानसून से पहले साल भर के मसाले तैयार करता था। मनीषा में मसाले मिलाने की स्वाभाविक प्रतिभा थी और उनके मसाले खास स्वाद के चलते लोकप्रिय होने लगे। शुरुआत में ग्रामीण महिलाएं उन्हें कच्चा माल देती थीं और वे मसाले पीसने व मिलाने के बदले प्रति किलोग्राम 30 रुपए कमाने लगीं। उनके जीवन का टर्निंग पॉइंट तब आया, जब एक राष्ट्रीयकृत बैंक ने 35 महिलाओं के लिए मसाला उत्पादन प्रशिक्षण आयोजित किया। मनीषा ने इसमें हिस्सा लेकर बिजनेस की बुनियादी बातें सीखीं और गांव में अपने उत्पाद बेचने लगीं। उनका सफर आसान नहीं था। परिजन और पड़ोसी खेती और घरेलू जिम्मेदारियों के बजाय बिजनेस में समय देने के उनके फैसले पर सवाल उठाने लगे। कई लोगों ने उनके विफल होने की भविष्यवाणी तक कर दी। लेकिन उन्होंने बहस न करने का निर्णय किया। दिन में वे बहू की जिम्मेदारियां निभातीं और रात में अचार-मसाले बनाती थीं। उन्हें असली सफलता तब मिली, जब उन्होंने महाराष्ट्र राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन के उमेद अभियान के तहत एक महिला स्वयं सहायता समूह जॉइन किया। इस समूह के जरिए उन्होंने छोटा-सा ऋण लिया, उपकरण खरीदे और स्थानीय मेलों में उत्पाद बेचने लगीं। इसका उत्साहजनक रेस्पॉन्स मिला। मांग बढ़ी तो उन्होंने और ऋण लिए, कारोबार बढ़ाया और 20 महिलाओं को रोजगार दिया। आज उनका उद्यम हर आठ दिन में 2 टन अचार और 200 किलो मसाले बनाता है। बिजनेस पूर्णतः पंजीकृत है, खाद्य सुरक्षा मानकों का पालन करता है और उनके पास सभी जरूरी प्रमाणपत्र हैं। हालांकि, सबसे संतोषजनक उपलब्धि कारोबार के आंकड़े नहीं हैं। उनकी दोनों बेटियां अब ग्रेजुएट हैं और बेटा 11वीं में पढ़ रहा है। वे खुद के लिए जो आर्थिक आजादी तलाश रही थीं, वही उनकी भावी पीढ़ी के लिए शिक्षा के अवसरों में बदल गई। फंडा यह है कि एक बेटी को शिक्षित कीजिए तो वह न सिर्फ खुद का जीवन स्तर ऊपर उठाती है, बल्कि पूरे परिवार के लिए अधिक शिक्षित, आत्मविश्वास से भरा और आर्थिक रूप से सुरक्षित भविष्य भी तैयार करती है। (एन. रघुरामन)

हमें क्या चाहिए- संस्कृति में बदलाव या सख्त कार्रवाई

1. 'मैं डॉक्टर बनना चाहता था। मैं हमेशा अच्छे नंबर लाने के लिए पढ़ाई करता था। लेकिन जापानियों ने मुझे बताया कि पढ़ाई क्यों जरूरी है। वहां शिक्षा जापानी हाईस्कूल छात्रों के साथ सामाजिक गतिविधियों में शामिल हुए और वहां की संस्कृति को महसूस किया। उसी गुरुवार को इस जगह से मीलों दूर कोलकाता

का मूल सिद्धांत यह है कि तकनीक में प्रगति जिज्ञासा की वजह से हुई है।' 2. 'पूरा देश स्वच्छ है। हमें वहां प्लास्टिक का टुकड़ा भी नहीं दिखेगा। मैं उनकी दयालुता, सहानुभूति और जिम्मेदारी की भावना से बहुत प्रभावित हुआ।' 3. 'मैं जापानियों का सिविक सेंस देखकर हैरान रह गया। वहां लोगों के चेहरे पर हमेशा मुस्कान रहती है।' ये बातें किसी महान शख्सियत ने नहीं कहीं, बल्कि गुरुवार को ये प्रतिक्रियाएं कर्नाटक के उन तीन स्टूडेंट्स की थीं, जो 56 भारतीय छात्रों के समूह के साथ काशिवा स्थित शिबुरा इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी गए थे। वहां उन्होंने नोबेल पुरस्कार विजेताओं समेत प्रमुख वैज्ञानिकों की विशेष कक्षाओं में हिस्सा लिया। जापान की प्रमुख यूनिवर्सिटीज और रिसर्च संस्थानों का दौरा किया। में राज्य की नगरीय मामलों की मंत्री अग्निमित्रा पॉल ने घोषणा की कि 'अगले तीन महीने हम जागरूकता और इंफ्रास्ट्रक्चर निर्माण अभियान चलाएंगे। लोगों से आग्रह करेंगे कि वे सड़कों पर कचरा न फेंकें। तीन माह बाद 1 सितंबर से कचरा फैलाने वालों पर जुर्माना लगाएंगे।'इन बच्चों के लिए सबसे बड़ा सबक था कि वहां के स्कूलों में सिविक रेस्पॉन्सिबिलिटी, नैतिकता, सहानुभूति और धैर्य सिखाने पर ज्यादा जोर देते हैं। यह उस अनुभव से बिल्कुल अलग था, जिसके ये स्टूडेंट आदी थे। भारतीय शिक्षा व्यवस्था में साइंस, टेक्नोलॉजी, इंजीनियरिंग और मैथ्स, बोर्ड परीक्षाओं और कम उम्र से अंग्रेजी की दक्षता को अत्यधिक प्राथमिकता दी जाती है। भारत में सफलता को अकसर नंबर, रैंक और किताबी ज्ञान से मापते हैं। जबकि जापान में, खासकर शुरुआती और विशेष विकास के चरणों में, सफलता इससे मापी जाती है कि बच्चा अपनी रोजमर्रा की जिंदगी कितने अच्छे-से संभालता है, टीम को कितना सहयोग करता है और कितनी भावनात्मक मजबूती दिखाता है। अगर वहां के पाठ्यक्रम को करीब से देखें तो उसे जानबूझकर ऐसा बनाया गया है, ताकि स्वतंत्र और सिविक-माइंडेड वयस्क तैयार किए जा सकें। वहां कुकिंग और सिलाई भी सिखाई जाती है, जिसे 'कतैका' कहते हैं। यह कोई बेकार विषय नहीं, बल्कि 'होम इकॉनॉमिक्स' के तौर पर जापान में लड़के और लड़कियों दोनों के लिए अनिवार्य विषय है। स्टूडेंट्स इसे सिर्फ इसलिए नहीं सीखते कि बड़े होकर पैरेंट्स या घरेलू सहायकों पर निर्भर न रहें, बल्कि इसमें वे न्यूट्रिशनल बैलेंस, बजटिंग और कपड़ों की मरम्मत सीखते हैं। फिर आता है संगीत और खेल। वे इसे बौद्धिक विकास, भावनात्मक अभिव्यक्ति और सामूहिक सामंजस्य का जरूरी साधन मानते हैं। जापान में बचपन में भारी अकादमिक परीक्षाओं को जानबूझकर टाला जाता है। वहां मान्यता है कि स्कूल के शुरुआती सालों में बच्चों को परीक्षा के अंकों के आधार पर 'स्मार्ट' और 'स्लूगलिंग' श्रेणियों में बांटने के बजाय उनमें चरित्र, व्यवहार और समाज के प्रति लगाव को विकसित करना चाहिए। जापानी शिक्षा मंत्रालय इन व्यवस्थाओं को स्पष्ट रूप से 'इकिरु चिकारा' नामक सिद्धांत के इर्द-गिर्द बुनता है, जिसका अर्थ है- 'जीने का उत्साह।' इसका उद्देश्य तीन मुख्य स्तंभों के बीच संतुलन बनाना है। 1. शैक्षणिक योग्यता, महज रटने के लिए नहीं बल्कि समस्या सुलझाने के लिए। 2. समृद्ध मानवीय गुण, यानी नैतिकता, सहानुभूति और नागरिक जिम्मेदारी। 3. स्वास्थ्य और शारीरिक मजबूती, जो दृढ़ता और आत्मअनुशासन लाती है। जापानी स्कूलों का मतलब अकादमिक पढ़ाई से कहीं ज्यादा है। वे चरित्र निर्माण के संपूर्ण तंत्र के जैसे काम करते हैं, जहां नैतिकता, नागरिक कर्तव्य और सख्त सामाजिक अनुशासन को रोजमर्रा की जिंदगी में शामिल किया जाता है। किताबों से परे स्टूडेंट्स स्कूल चलाने में सक्रिय भागीदारी निभाते हैं, कठोर क्लब गतिविधियों में हिस्सा लेते हैं और प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करते हैं। फंडा यह है कि यह लड़ाई नैतिकता और दबाव के बीच की है। अगर आप भावी पीढ़ी के लिए यह जंग जीतना चाहते हैं तो उन्हें स्कूली दिनों में ही सहानुभूति का पाठ पढ़ाना चुनिए, ताकि हमें कार्रवाई के लिए कानून बनाने को मजबूर न होना पड़े। एन. रघुरामन

जमीन पर उतर रही कॉकरोच पार्टी,साथ कौन-कौन,सरकार कैसे निपटेगी,क्या किसी मूवमेंट की तैयारी!

पार्टी का संविधान, संगठन बनाने की प्रक्रिया, पद पाने वाले लोगों के कार्यकाल वगैरह के बारे में भी बताना होता है।एक पेच ये भी है कि हरियाणा में पानीपत के रहने वाले वकील सुधीर जाखर ने खुद को सीजेपी का राष्ट्रीय संयोजक बताते हुए 25 मई को इसे पार्टी के तौर पर रजिस्टर करने के लिए चुनाव आयोग में अप्लाई किया था। उन्होंने इसकी वजह बताते हुए कहा था, 'जब दीपके ने भारत आने से इनकार किया, तो हमें लगा कि कोई और इसका रजिस्ट्रेशन करवाकर दुरुपयोग करता है, इससे पूरा आंदोलन बेकार हो जाएगा। इसलिए हमने खुद इसका निर्णय लिया।' हालांकि इस पर अभिजीत का कोई बयान नहीं आया है। सवाल-5: राजनीतिक पार्टी बन गई, तो क्या चुनाव निशान 'कॉकरोच' मिलेगा? जवाबः फिलहाल कॉकरोच चुनाव निशान किसी को नहीं मिल सकता। दरअसल, चुनाव आयोग के इलेक्शन सिंबल रिजर्वेशन एंड अलॉटमेंट ऑर्डर, 1968 के तहत नई रजिस्टर्ड पार्टियों को 'फ्री सिंबल लिस्ट' से चुनाव निशान मिलता है। इसमें लैंडलाइन फोन, लैपटॉप, टीवी, ताला-चाबी, फूलगोभी, साबुनदानी और स्टेपलर जैसे 200 से ज्यादा सिंबल हैं। 1991 से चुनाव आयोग ने पक्षी या जानवरों से जुड़े सिंबल देने बंद कर दिए हैं। कॉकरोच को कीट की श्रेणी में रखा जाता है। इसके बारे में कोई जानकारी नहीं है कि इसे आधिकारिक तौर पर जानवरों में रखा जाएगा या नहीं। सीजेपी ने अपने सिंबल में मोबाइल फोन की स्क्रीन के अंदर एक कोचरोच दिखाया था। अगर वे मोबाइल फोन का सिंबल मांगते हैं, तो भी मुश्किल है, क्योंकि मोबाइल फोन 'फ्री सिंबल' की लिस्ट में नहीं है। सवाल-6: क्या अभिजीत दीपके ही इसके प्रेसिडेंट बनेंगे, उनकी कहानी क्या है? जवाबः अभी तक सीजेपी का चेहरा अभिजीत दीपके हैं। उनके भारत आने को लेकर हो रही तैयारियां और सीजेपी की प्रेस कॉन्फ्रेंस से ये साफ है कि आगे भी अभिजीत ही मुख्य भूमिका में होंगे। 30 साल के अभिजीत महाराष्ट्र के संभाजी नगर के रहने वाले डिजिटल मीडिया स्ट्रैटेजिस्ट हैं। अभिजीत ने पुणे से पत्रकारिता की पढ़ाई की है। फिलहाल, अमेरिका की बॉस्टन यूनिवर्सिटी में पब्लिक रिलेशंस से मास्टर्स की पढ़ाई कर रहे हैं। अभिजीत 2020 से 2022 तक आम आदमी पार्टी के सोशल मीडिया स्ट्रैटेजिस्ट रहे हैं। 2020 के दिल्ली विधानसभा चुनावों में आप छोड़कर बोस्टन यूनिवर्सिटी में अप्लाई किया था। एडमिशन मिल गया, तो वे अमेरिका शिफ्ट हो गए। किसान आंदोलन से लेकर महंगाई जैसे राजनीतिक मुद्दों पर अभिजीत एक्स अकाउंट पर केंद्र सरकार और पीएम पर निशाना साधते रहे हैं। सवाल-7: जेन-जी के अलावा सीजेपी से कौन-से बड़े चेहरे जुड़े, कहीं से फंडिंग भी मिल रही? जवाबः सीजेपी के प्रोटेस्ट में कई बड़ी हस्तियां शामिल हैं- सोनम वांगचुक, शिक्षाविदः वांगचुक ने 2 जून को एक्स पर वीडियो जारी करके कहा, 'मैं सीजेपी के आंदोलन से जुड़ने आ रहा हूं। सीजेपी वाले देशप्रेमी लोग हैं, आप भी उनके साथ जुड़ना चाहिए।' प्रकाश राज, फिल्म अभिनेताः अभिनेता प्रकाश राज ने एक्स पर लिखा, 'मैं शूटिंग के लिए फिलहाल दिल्ली से बहुत दूर हूं, लेकिन फिर भी मैं सीजेपी के आंदोलन में पहुंचे की पूरी कोशिश करूंगा।' हालांकि अभी प्रकाश राज के पहुंचने की जानकारी नहीं है। अमित जोगी, जनता कांग्रेस छत्तीसगढ़ अध्यक्षः छत्तीसगढ़ के पहले सीएम अजीत जोगी के बेटे और जेसीसी अध्यक्ष अमित जोगी ने कहा था, 'छत्तीसगढ़ में कॉकरोच को झेंगुरा कहते हैं और जंतर-मंतर पर झेंगुरा पहुंच रहा है। हम सीजेपी को समर्थन देने वालीं देश की पहली पार्टी बनेंगे।' इसके अलावा एक्टर अतुल कुलकर्णी, दिल्ली यूनिवर्सिटी स्टूडेंट यूनियन के पूर्व अध्यक्ष रौनक खत्री, स्टूडेंट्स फेडरेशन ऑफ इंडिया यानी एसएफआई की अध्यक्ष आइशे घोष भी प्रोटेस्ट में शामिल हैं। अभी तक सीजेपी की फंडिंग के कोई सोर्स का भी कोई पुख्ता सबूत नहीं है। 3 जून को प्रवक्ता सौरव दास ने कहा, 'हमें फंडिंग की जरूरत क्यों पड़ेगी? हमारे पीछे जो पार्टी का पोस्टर लगा है, वो 200 रुपए का है, लोग प्रोटेस्ट में अपने खर्चे पर आ सकते हैं। ये नैरेटिव आंदोलन को भटकाने के लिए खड़ा किया जा रहा है।' सीजेपी की ऑफिशियल वेबसाइट के मुताबिक, 'पार्टी पूरी तरह कम्युनिटी फंडिंग यानी आंदोलन से जुड़े लोगों से मिले पैसों पर काम करती है। किसी राजनीतिक संगठन या प्राइवेट कंपनी से डोनेशन नहीं लेगी।' सवाल-8: कॉकरोच पार्टी को लेकर सरकार का रुख क्या है?जवाबः अभिजीत और उनकी सीजेपी पर आरोप हैं कि उनके पीछे एंटी नेशनल ताकतें और विदेशी फंडिंग है। भारतीय खुफिया एजेंसी आईबी ने सीजेपी के पहले एक्स हैंडल को ब्लॉक करने का इनपुट दिया था। इसमें कहा गया, 'हैंडल का भड़काऊ कॉन्टेंट देश के युवाओं के बीच फैल रहा था। इससे देश की नेशनल सिक्योरिटी को खतरा हो सकता था।' इसके बाद सरकार ने एक्स को भारत में सीजेपी के हैंडल पर रोक लगाने का निर्देश दिया था। 22 मई को बीजेपी सांसद निशिकांत दुबे ने एक्स पर लिखा था, 'अभिजीत को बोस्टन जाने के लिए किसने पैसा दिया? क्या सोरोस फाउंडेशन उनके रहने-खाने का खर्च उठा रहा है? क्या विपक्षी दल देश को तोड़ने के लिए विदेशी ताकतों से मदद ले रहे हैं?' सीजेपी ने कहा है कि वह शांतिपूर्ण प्रोटेस्ट करेंगे। अगर मौके पर मौजूद फोर्सेज से संघर्ष की स्थिति बनी, तो अभिजीत और साथियों को हिरासत में भी लिया जा सकता है। हालांकि इससे कॉकरोच पार्टी के पक्ष में सहानुभूति की लहर उठने का खतरा है। फिलहाल ऐसा लग रहा है कि सरकार प्रोटेस्ट की अनुमति देकर कॉकरोच पार्टी को एक सटायर मूवमेंट की तरह ही ट्रीट कर रही है, जिससे उन्हें कोई नुकसान नहीं होने वाला। सवाल-9: क्या ऐसी किसी पार्टी के लिए फिलहाल भारत की राजनीति में जगह है? जवाबः कॉकरोच पार्टी के उभार की टाइमिंग और मुद्दे इसे मौजूदा राजनीति में प्रासंगिक बनाते हैं। पॉलिटिक एनालिस्ट योगेंद्र यादव कहते हैं, 'देश के भीतर एक छटपटाहट है। जब सरकार संस्थाओं पर कब्जा कर लेती है और पूर्णसत्ता स्थापित करती है, तब विद्रोह अनपेक्षित जगहों से पैदा होता है। जैसे- 1971 में इंदिरा गांधी की भारी जीत के बाद 1974 में जयप्रकाश आंदोलन हुआ। 2009 में कांग्रेस की जीत के बाद 2011 में अन्ना आंदोलन और 2019 में पीएम मोदी के दूसरी बार सत्ता में आने के 2 साल बाद किसान आंदोलन हुआ।' वहीं कांग्रेस सांसद शशि थरूर कहते हैं, 'युवा निराश है, इसीलिए इससे जुड़ रहा है। उम्मीद है कि इसके पीछे जो लोग हैं, वो इस एनर्जी को मेनस्ट्रीम पॉलिटिक्स में लाने का रास्ता निकाल लेंगे या फिर अपने वोट के जरिए बदलाव की आवाज बनेंगे।' चलिए समझते हैं मामले को सवाल जवाब के माध्यम से।

पुतिन ने भारत को सुखोई-57 ऑफर किया,इस पांचवी जनरेशन फाइटर जेट की तकनीक भी शेयर करेंगे, अमेरिका से बोले- भारत पर दबाव डालना बेकार

सेंट पीटर्सबर्ग। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने भारत को सुखोई एसयू -57 स्टेल्थ फाइटर जेट को लेकर बड़ा ऑफर दिया है। उन्होंने कहा है कि रूस, भारत के साथ मिलकर इस विमान का विकास और उत्पादन करने के लिए तैयार है। साथ ही रूस जरूरी रक्षा तकनीकें साझा करने के लिए भी तैयार है।पुतिन ने गुरुवार को सेंट पीटर्सबर्ग इंटरनेशनल इकोनॉमिक फोरम के दौरान अंतरराष्ट्रीय मीडिया से बातचीत की। इस दौरान उन्होंने कहा कि पहले भी भारत को इसे बनाने के प्रोजेक्ट में साझेदार बनने का ऑफर दिया था। उस समय भारत ने कहा था कि रूस पहले इस प्रोजेक्ट को आगे बढ़ाए, उसके बाद भारत इसमें शामिल होने पर विचार करेगा। पुतिन ने कहा- 'यह विमान हमारा जॉइंट प्रोजेक्ट हो सकता था। हमने इसे अपने दम पर विकसित किया, लेकिन अब भी हम भारत के साथ इस क्षेत्र में काम करने के लिए तैयार हैं। हम भारत को यह विमान देने और इसके आगे के विकास में साझेदारी करने के लिए तैयार हैं। इसमें हमें कोई समस्या नजर नहीं आती। यही बात एयर डिफेंस सिस्टम पर भी लागू होती है।' पुतिन ने अमेरिका-भारत के संबंधों पर कहा कि यूएस कई मुद्दों पर दबाव बनाने की कोशिश कर रहा है, लेकिन इस तरह की कोशिशें बेकार हैं। भारत इसका विरोध करेगा। पुतिन बोले- एसयू-57 दुनिया का सबसे अच्छे फाइटर जेट्स में से एक-पुतिन ने सुखोई एसयू-57 की तारीफ करते हुए कहा कि यह पांचवीं पीढ़ी का लड़ाकू विमान है और उनकी नजर में दुनिया के सबसे अच्छे फाइटर जेट्स में से एक है। इसमें स्टेल्थ क्षमता, उच्च गतिशीलता, आधुनिक एवियोनिक्स और मल्टी-रोल कॉम्बैट क्षमताएं हैं। सुखोई एसयू-57 हवा, जमीन और समुद्री लक्ष्यों पर हमला करने में सक्षम है। दुनिया में कुछ ही पांचवीं पीढ़ी के लड़ाकू विमान हैं जिनमें एसयू-5 के साथ चीन का जे-35 और अमेरिका के एफ-35 शामिल हैं। भारतीय वायुसेना के बेड़े में इस समय सबसे एडवांस जनरेशन का फाइटर जेट फ्रांसीसी मूल का राफेल है। इसे तकनीकी रूप से 4.5 जनरेशन का लड़ाकू विमान माना जाता है। भारत ने सुखोई प्रोजेक्ट से जुड़ने का ऑफर ठुकराया था-मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक रूस ने भारत को 2018 के आसपास सुखोई प्रोजेक्ट में शामिल होने का प्रस्ताव दिया गया था, उस समय भारत ने एसयू-57 प्रोजेक्ट में रुचि दिखाई थी, लेकिन भारतीय वायुसेना का मानना था कि यह विमान उसकी सभी जरूरतों को पूरा नहीं करता। उस दौर की कई रिपोर्टों में दावा किया गया था कि वायुसेना इसकी स्टेल्थ क्षमताओं से पूरी तरह संतुष्ट नहीं थी। इसके अलावा तकनीक हस्तांतरण (टेक्नोलॉजी ट्रांसफर) को लेकर भी दोनों पक्षों के बीच मतभेद थे। गौरतलब है कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने पिछले वर्ष प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की व्हाइट हाउस यात्रा के दौरान भारत को एफ-35 की पेशकश की थी। अब पुतिन के नए प्रस्ताव के बाद माना जा रहा है कि रूस इन पुरानी चिंताओं को दूर करने की कोशिश कर रहा है। पुतिन बोले- रूस, भारत-चीन के रिश्तों में दखल नहीं देगा-पुतिन ने कहा है कि भारत और चीन के रिश्ते बेहद संवेदनशील और जटिल हैं, इसलिए रूस उनमें दखल नहीं देना चाहता। उन्होंने भरोसा जताया कि मोदी और जिनपिंग बातचीत के जरिए सीमा विवाद समेत सभी अहम मुद्दों का समाधान निकाल सकते हैं। उन्होंने कहा- 'भारत और चीन के साथ रूस के रिश्ते अलग-अलग और स्वतंत्र हैं। भारत के साथ रूस की दोस्ती से चीन को कोई परेशानी नहीं होती और चीन के साथ रूस के करीबी संबंधों से भारत के साथ उसके रिश्तों पर भी कोई असर नहीं पड़ता।' रूसी राष्ट्रपति ने भारत, रूस और चीन के त्रिपक्षीय मंच का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा कि एक समय उन्होंने भारत और चीन के नेताओं को रूस में एक साथ मिलने का सुझाव दिया था, जिसके बाद यह मंच बना। बाद में इसी तरह के सहयोग ने ब्रिक्स जैसे बड़े समूह की नींव रखने में भी मदद की।

पुतिन ने भारत-पाकिस्तान संबंधों पर भी पुतिन ने टिप्पणी की। उन्होंने कहा कि रूस भारत और पाकिस्तान के बीच मौजूद मुश्किल मुद्दों को समझता है। हालांकि उन्होंने इस पर ज्यादा विस्तार से बात नहीं की। जब उनसे पूछा गया कि क्या पाकिस्तान चीन के प्रभाव में है, तो पुतिन ने इससे सहमति नहीं जताई। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान एक बड़ा देश है और उसके कई देशों के साथ अलग-अलग तरह के संबंध हैं। हालांकि उन्होंने यह भी माना कि पाकिस्तान के लिए चीन के साथ सहयोग काफी महत्वपूर्ण है।

वर्ल्ड बैंक में एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर बने इकोनॉमिस्ट नीलकंठ मिश्रा,परमेश्वरन अय्यर की जगह लेंगे

नयी दिल्ली। इकोनॉमिस्ट और मार्केट स्ट्रैटेजिस्ट नीलकंठ मिश्रा को वर्ल्ड बैंक में भारत का नया एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर नियुक्त किया है। कैबिनेट की नियुक्ति समिति ने उनके नाम को मंजूरी दी है। वे वॉशिंगटन स्थित वर्ल्ड बैंक के हेडक्वार्टर में 3 साल तक भारत का प्रतिनिधित्व करेंगे। मिश्रा मौजूदा एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर परमेश्वरन अय्यर की जगह लेंगे। जब तक नीलकंठ मिश्रा अपना पद नहीं संभाल लेते, तब तक अय्यर का कार्यकाल बढ़ा दिया गया है। वर्ल्ड बैंक में भारत के लिए क्या काम करेंगे मिश्रा? एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर के रूप में नीलकंठ मिश्रा वर्ल्ड बैंक के बोर्ड में भारत का प्रतिनिधित्व करेंगे। यह बोर्ड वर्ल्ड बैंक के लोन ऑपरेशंस, डेवलपमेंट प्रोजेक्ट्स, फाइनेंशियल पॉलिसी और गवर्नेंस से जुड़े फैसलों की निगरानी करता है। भारत के लिए इस पद को इकोनॉमिक डिप्लोमेसी के लिहाज से महत्वपूर्ण माना जाता है। इसके जरिए ग्लोबल डेवलपमेंट फाइनेंसिंग, इंफ्रास्ट्रक्चर इन्वेस्टमेंट और इकोनॉमिक ग्रोथ जैसे मुद्दों पर होने वाली चर्चाओं में मदद मिलती है। उनकी यह नियुक्ति ऐसे समय में हुई है जब भारत अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थानों में अपनी मजबूत आवाज और ग्लोबल डेवलपमेंट एजेंडे को प्रभावित करने की कोशिश कर रहा है। पीएम की आर्थिक सलाहकार परिषद के भी सदस्य हैं मिश्रा-कॉर्पोरेट सेक्टर में बड़ी जिम्मेदारियां संभालने के साथ-साथ मिश्रा पब्लिक पॉलिसी और सरकारी समितियों में भी काफी एक्टिव रहे हैं। वे प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद के पार्ट-टाइम सदस्य हैं, जो आर्थिक और नीतिगत मामलों पर सीधे सरकार को सलाह देती है। इसके अलावा वे आधार का मैनेजमेंट करने वाली संस्था भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण के पार्ट-टाइम चेयरमैन भी हैं।

केजीएमयू में 244 ऑपरेशन में एक मरीज आयुष्मान का,भुगतान वाली सर्जरी ज्यादा हुईं

लखनऊ। केजीएमयू के नेत्र रोग विभाग में दवाएं और मोतियाबिंद ऑपरेशन में इस्तेमाल होने वाले लेंस निजी दुकानों से लिखने के आरोपों की जांच में नया खुलासा हुआ है। जांच के दौरान पता चला कि विभाग के एक डॉक्टर ने पिछले छह महीनों में 244 मोतियाबिंद ऑपरेशन किए, लेकिन इनमें से केवल एक सर्जरी ही आयुष्मान भारत योजना के तहत की गई। जांच में हॉस्पिटल रिवॉल्विंग फंड (एचआरएफ) के तहत उपलब्ध कराए गए लेंसों के उपयोग को लेकर भी अनियमितता सामने आई है। रिकॉर्ड के अनुसार विभाग में एचआरएफ लेंसों का इस्तेमाल करीब 70 प्रतिशत मामलों में ही हुआ, जबकि यह अनुपालन 95 से 100 प्रतिशत के बीच होना चाहिए था। अधिकारियों का कहना है कि एचआरएफ के माध्यम से लगभग सभी प्रकार के लेंस उपलब्ध हैं। 50फीसदी मोतियाबिंद ऑपरेशन सरकारी योजनाओं से- जांच अधिकारियों की ओर से खंगाले गए रिकॉर्ड के अनुसार बाकी सभी मोतियाबिंद और अन्य सर्जरियां भुगतान लेकर की गईं। अधिकारियों का कहना है कि विभाग में सामान्य तौर पर करीब 50 प्रतिशत मोतियाबिंद ऑपरेशन आयुष्मान भारत और अन्य सरकारी कैशलेस योजनाओं से होते हैं। ऐसे में 244 ऑपरेशन में सिर्फ एक आयुष्मान मरीज मिलना कई सवाल खड़े कर रहा है। एक डॉक्टर की कार्यशैली पर केंद्रित हुई जांच-सूत्रों के मुताबिक विभाग के अन्य चिकित्सकों की तुलना में एक डॉक्टर पर ऐसे से उपलब्ध लेंसों का अपेक्षाकृत कम इस्तेमाल करने के आरोप हैं। जांच समिति अब इस पहलू की गहराई से पड़ताल कर रही है और विभिन्न रिकॉर्ड का मिलान कर रही है। मरीजों को बाहर भेजने की आशंका-जांच एजेंसियां यह भी पता लगाने में जुटी हैं कि कहीं भुगतान वाली सर्जरी को प्राथमिकता देकर मरीजों को निजी दुकानों से लेंस और दवाएं खरीदने के लिए तो नहीं कहा गया। इसी बिंदु पर सबसे ज्यादा फोकस किया जा रहा है। शिकायत के बाद खुली जांच की परतें-गोरखपुर के एक मरीज की शिकायत मुख्यमंत्री जनता दर्शन तक पहुंचने के बाद मामले की जांच शुरू हुई थी। शिकायत में आरोप लगाया गया था कि अस्पताल में उपलब्ध दवाओं और लेंसों के बावजूद उन्हें बाहर से खरीदारी करने के लिए कहा गया। इसके बाद गठित जांच समिति ने रिकॉर्ड खंगालना शुरू किया, जिसमें अब कई नए तथ्य सामने आ रहे हैं।रिपोर्ट के इंतजार में प्रशासन-केजीएमयू प्रवक्ता डॉ. केके सिंह ने बताया कि फिलहाल जांच जारी है। समिति ऑपरेशन रिकॉर्ड, मरीजों के दस्तावेजों और विभागीय अभिलेखों का परीक्षण कर रही है। अंतिम रिपोर्ट के आधार पर आगे की प्रशासनिक कार्रवाई तय की जाएगी।

एमपी सिविल सेवा के नए नियम

2 से अधिक बच्चे तो नहीं कर सकेंगे सरकारी नौकरी,प्रोबेशन के 6 माह बाद कोई एक्शन नहीं तो ऑटो परमानेंट होंगे

भोपाल। मध्य प्रदेश सरकार सिविल सेवा नियमों में बड़ा बदलाव करने जा रही है। सामान्य प्रशासन विभाग (जीएडी) ने मध्य प्रदेश सिविल सेवा (सेवा की सामान्य शर्तें) नियम, 2026 का नया मसौदा (ड्राफ्ट) जारी कर दिया है। इसकी सबसे बड़ी बात यह है कि सरकारी नौकरी के लिए दो से अधिक बच्चों की पाबंदी को बरकरार रखा गया है, जबकि पिछले साल खुद जीएडी ने ही इस पाबंदी को हटाने का प्रस्ताव तैयार किया था, जिसे मुख्यमंत्री की सैद्धांतिक सहमति भी मिल गई थी, लेकिन नए नियमों में सरकार इस फैसले से पलट गई है। बता दें 24 साल पहले साल 2001 में प्रदेश की तत्कालीन दिग्विजय सिंह सरकार ने मध्य प्रदेश सिविल सेवा (सेवा की सामान्य शर्तें) नियम, 1961 में संशोधन करते हुए यह प्रतिबंध लागू किया था। क्या कहता है दो बच्चों वाला नियम? नए ड्राफ्ट के नियम 5 और 6 के तहत पात्रता और अपात्रता की शर्तें तय की गई हैं। इसके अनुसार- कोई भी उम्मीदवार जिसकी दो से अधिक जीवित संतानें हैं और उनमें से किसी एक का जन्म 26 जनवरी 2001 को या उसके बाद हुआ है, वह सरकारी नौकरी के लिए पात्र नहीं होगा। जुड़वां बच्चों का मामलाः यदि किसी का पहले से एक बच्चा है और अगले प्रसव (डिलीवरी) में जुड़वां या उससे ज्यादा बच्चे होते हैं तो वह अपात्र नहीं माना जाएगा। सरकार कर्मचारियों की भर्ती, प्रोबेशन और सीनियरिटी से जुड़े नए नियम भी ला रही है। ये राज्य की अधिकांश सरकारी सेवाओं पर लागू होंगे। नए नियमों के तहत अब अगर कोई कर्मचारी प्रोबेशन पीरियड पर है और अवधि समाप्त होने के 6 महीने के भीतर विभाग उसके स्थायीकरण पर कोई निर्णय नहीं लेता तो उसे ऑटोमैटिकली स्थायी मान लिया जाएगा। यदि एक ही साल में सीधी भर्ती, अनुकंपा नियुक्ति और प्रमोशन) से लोग आते हैं तो सीनियरिटी सबसे पहले सीधी भर्ती वाले को, फिर अनुकंपा और आखिर में प्रमोशन वाले को मिलेगी, लेकिन यदि तीनों का नियुक्ति आदेश एक ही तारीख को निकलता है, तो प्रमोटेड व्यक्ति सबसे सीनियर माना जाएगा। इसके बाद सीधी भर्ती और फिर अन्य का नंबर आएगा। हर साल अपडेट होगी ग्रेडेशन लिस्टः हर साल 1 जनवरी की स्थिति में 31 मार्च तक कर्मचारियों की नई ग्रेडेशन लिस्ट अपडेट की जाएगी। इन 4 परिस्थितियों में भी नौकरी के लिए होंगे अयोग्य-एक से अधिक जीवनसाथीः यदि किसी व्यक्ति का एक से अधिक जीवित जीवनसाथी है, तो वह अपात्र होगा (विशेष मामलों में छूट संभव)। मेडिकल अनफिटः शारीरिक या मानसिक रूप से अनफिट पाए जाने पर नियुक्ति नहीं होगी। चारित्रिक दागः नैतिक अधोपतन या चारित्रिक मामलों से जुड़े अपराध में दोषी पाए जाने पर नौकरी नहीं मिलेगी।बर्खास्त कर्मचारीः केंद्र, राज्य या स्थानीय निकाय से नौकरी से हटाए गए लोग अपात्र होंगे। मंत्रालय अधिकारी कर्मचारी संघ के अध्यक्ष सुधीर नायक ने ड्राफ्ट के एक नियम पर आपत्ति जताई है। नियम के मुताबिक, यदि किसी उम्मीदवार के खिलाफ कोई आपराधिक मामला लंबित है, तो अंतिम फैसला आने तक उसकी जॉइनिंग रोक दी जाएगी। मंत्रालय अधिकारी कर्मचारी संघ के अध्यक्ष सुधीर नायक के मुताबिक- मारे देश में किसी को परेशान करने के लिए भी झूठी एफआईआर दर्ज करा दी जाती है और कोर्ट से फैसला आने में सालों लग जाते हैं। ऐसे में निर्दोष होने पर भी व्यक्ति लंबे समय तक नौकरी से वंचित रह जाएगा, जो कि गलत है। जीएडी की वेबसाइट पर 15 जून तक दे सकते हैं सुझाव-जीएडी के अपर सचिव अजय कटेसरिया के अनुसार, इस नए मसौदे पर कर्मचारी संगठनों और आम जनता से सुझाव मांगे गए हैं। 15 जून तक जीएडी की वेबसाइट पर राय दी जा सकती है। सुझावों के बाद फाइनल ड्राफ्ट कैबिनेट की मंजूरी के लिए जाएगा और यह नियम इसी साल जुलाई से लागू हो सकते हैं।

नेहा कक्कड़ हो गई 38 की, समोसे बेचते थे पिता,4 साल में जगराता गाया, छोटे से कमरे में रहीं, वैन में सोईं

मुंबई। नेहा कक्कड़ का जन्म ऋषिकेश के बेहद गरीब परिवार में हुआ। तीन भाई-बहनों में नेहा

सबसे छोटी थीं। सोनू कक्कड़ (सिंगर) और टोनी कक्कड़ (सिंगर-कंपोजर) उनसे बड़े थे। पिता के पास गुजारे के लिए कोई पक्की नौकरी नहीं थी। वो पत्नी निती कक्कड़ और 3 बच्चों के साथ ऋषिकेश के एक 10 बाय 10 के किराए के कमरे में रहते थे। गरीबी का वो आलम था कि घर में किचन तक नहीं था। मां उसी कमरे में एक टेबल रखकर उस पर खाना पकातीं। उसी कमरे में सब उठते-बैठते, सोते, खेलते। नेहा महज 4 साल की थीं, जब पिता रोजी-रोटी की तलाश में दिल्ली शिफ्ट हो गए। वो एक छोटे से स्कूल के बाहर समोसे बेचने लगे। बड़ी बहन सोनू उसी स्कूल में पढ़ती थीं। स्कूल में पिता के काम के चलते उनका जमकर मजाक बनाया जाता था, जिससे वो काफी रोती थीं। परिवार का गुजारा मुश्किल होने लगा, तो पिता ने बड़ी बेटी सोनू कक्कड़ के साथ जगराते में गाना शुरू कर दिया। पिता को लिखने का शौक था, तो वो खुद जगराते के लिए गाने लिखा

करते थे। समय के साथ भाई टोनी और फिर 4 साल की उम्र में नेहा ने भी पिता की आर्थिक मदद करने के लिए जगराते में गाना शुरू कर दिया। पूरा परिवार रिक्शे से जगराता करने जाता था। हर जगराते के उन्हें 500 रुपए तक मिलने लगे और घर के हालात भी बेहतर हो गए। समय के साथ पिता ने ट्रेवलिंग के लिए एक वैन ले ली। जब भी कभी रातभर जगराता होता, तो पिता वैन के पीछे वाली सीट खोलकर वहीं बच्चों के लिए गद्दे बिछा देते थे, जिससे बच्चों को आराम मिल सके। कभी चंद रुपयों के लिए अपना बचपन खोने वालीं नेहा कक्कड़ 38 साल की हो चुकी हैं और सिंगिंग स्टार हैं। नेहा के बर्थडे के खास मौके पर एक नजर उनकी जिंदगी की प्रेरणादायक कहानी पर-इंडियन आइडल के एक एपिसोड में बचपन के दिनों को याद कर नेहा ने कहा था-'मैंने 4 साल की उम्र में गाना शुरू किया। उस समय कोई टाइम लिमिट नहीं होती थी। जगराते कभी-कभी रात से शुरू होकर सुबह तक चलते थे और हम लगातार गाते थे। लोग हमारी तारीफ तक नहीं करते थे, कई बार तो ऐसा भी हुआ, जब हम रातभर गाने के चलते स्कूल नहीं जा सके।' झगड़े में भाई की जांघ में मारा पैन- नेहा कक्कड़, भले ही पढ़ाई से दूर रहीं, लेकिन शरारत में अव्वल थीं। सोनू उनसे बड़ी थीं, लेकिन टोनी से उम्र का फासला कम होने पर दोनों खूब झगड़ते थे। कपिल शर्मा शो में आए कक्कड़ भाई-बहनों ने बताया कि एक बहस के बाद नेहा ने भाई टोनी की जांघों पर

पैन से ऐसा हमला किया कि आधा पैन उनकी जांघ में घुस गया था। 5 साल की उम्र में बड़ों को टक्कर देकर जीता म्यूजिक कॉम्पिटिशन- नेहा कक्कड़ ने महज 5 साल की उम्र में ऋषिकेश में होने वाले एक म्यूजिकल कॉन्टेस्ट में हिस्सा लिया। उस कॉम्पिटिशन में कोई एज लिमिट नहीं थी, तो 5 साल की नेहा को 16-17 और उससे भी बड़े लोगों के साथ कंपीट करना पड़ा। नन्ही सी नेहा ने तब नई-नई आई फिल्म फूल और कांटे का गाना मैंने प्यार तुम्ही से किया है गाया था। नेहा ने अपनी मधुर आवाज से बड़ों को न सिर्फ कड़ी टक्कर दी, बल्कि वो कॉम्पिटिशन भी जीता। आगे वो शादियों और इवेंट में भी गाने लगीं। एक बार नेहा-सोनू को एक बड़े जागरण में गाने का मौका मिला, जिसमें उनसे ठीक पहले आशा भोसले ने परफॉर्मेंस दी थी। रिश्तेदार-पड़ोसियों ने बच्चों से गाना गंवाने पर दिए ताने-समय के साथ नेहा-सोनू को भजन संध्या और जगराता के काफी काम मिलने लगे। वो दिल्ली, ऋषिकेश के अलावा भी चंडीगढ़ समेत नॉर्थ के कई शहरों में परफॉर्म करने जाती थीं, जिससे उनकी पढ़ाई ठीक तरह नहीं हो पाती थी। बच्चों की कमाई से ही एक समय घर चलने लगा, जिसके चलते आस-पड़ोस के लोग और रिश्तेदार उनके पेरेंट्स को काफी ताने देते थे। सोनू कक्कड़ को रियलिटी शो के बाद मिला था 'बाबू जी जरा धीरे चलो' गाना- दिल्ली में गायिकी में मजबूत पकड़ बनाने के बाद बड़ी बहन सोनू कक्कड़ ने 2003 में मुंबई के सिंगिंग रियलिटी शो पॉपस्टार जीता। उस शो के जज संदीप चौटा को सोनू की आवाज इतनी पसंद आई कि उन्होंने शो खत्म होते ही उन्हें ऑफिस बुलाकर, फिल्म 'दम' का गाना 'बाबू जी जरा धीरे चलोष्ठ,' ऑफर कर दिया। कम समय में ही सोनू ने म्यूजिक इंडस्ट्री में मजबूत पकड़ बनाते हुए कई हिट गाने दिए। 16 साल की उम्र में भाई के साथ पहुंचीं मुंबई-सोनू की बढ़ती पॉपुलैरिटी के बीच ही नेहा कक्कड़ 16 साल की उम्र में भाई टोनी के साथ म्यूजिक में करियर बनाने के लिए मुंबई आ गईं। टोनी कक्कड़ को कंपोजिशन का शौक था, तो वो कंपोजर संदीप चौटा के साथ बतौर लिरिसिस्ट (गीतकार) का काम सीखने लगे, वहीं नेहा कई सिंगिंग रियलिटी शोज में ऑडिशन दिया करती थीं। तब वो 11वीं क्लास में थीं। एक साल के लंबे संघर्ष के बाद उनका इंडियन आइडल सीजन 2 में सिलेक्शन हुआ। ऑडिशन में जज रहे सोनू निगम ने नेहा से कहा कि उनकी आवाज फंसी-फंसी लग रही है। हालांकि थोड़ी देर उन्हें परेशान करने के बाद वो गोल्डन वर्ल्ड कहे गए, 'आप मुंबई आ रही

हैं।' शो में नेहा ने कहा था कि वो इंडियन आइडन-1 के विनर अभिजीत सावंत जितनी फेमस होना चाहती हैं। नेहा की जर्नी शानदार रही, लेकिन वो 10वें नंबर पर शो से बाहर हो गईं। हालांकि

अब नेहा कक्कड़ हुनर और मेहनत की बदौलत खुद इंडियन आइडन की पसंदीदा जजेस में से एक हैं।

इंडियन आइडल 2 के विजेता संदीप आचार्य रहे, जिनका 2013 में महज 29 साल की उम्र में पीलिया से निधन हो गया। इंडियन आइडन हारने के बावजूद नेहा ने हार नहीं मानी और खुद अपनी म्यूजिल एल्बम 'नेहाः द रॉकस्टार' रिलीज किया। ये एल्बम हिट रहा और आगे नेहा ने रोमियो जूलिएट म्यूजिक एल्बम बनाया, जिसे उनके भाई टोनी कक्कड़ ने कंपोज किया। एल्बम हिट होने के बाद नेहा को 'मीराबाई नॉट आउट' (2008) का गाना 'हाय रामा' मिला, जिसे उन्होंने सुखविंदर के साथ गाया। ए.आर.रहमान के गाने में हुईं फीचर, टीवी शो के गाने से मिली पहचान-नेहा कक्कड़ ने सिंगिंग के अलाव एक्टिंग में भी हाथ आजमाया। वो फिल्म ब्लू के टाइटल सॉन्ग के कोरस में दिखीं। इसके अलावा वो फिल्म इसी लाइफ में (2010) में नजर आ चुकी हैं। उन्होंने कॉमेडी सर्कस के तानसेन में कपिल शर्मा और अली असगर के साथ काम किया। वो कई कन्नड़ और तेलुगु गानों में भी नजर आई हैं। 2009 में नेहा कक्कड़ ने टीवी शो 'ना आना इस देश लाडो' के टाइटल सॉन्ग को आवाज दी, जिससे उन्हें काफी पहचान मिली थी। नेहा कक्कड़ ने कन्नड़ फिल्म 'थमास्सू' के गाने 'नोडू बारे' को आवाज दी, जिसके लिए उन्हें साउथ फिल्मफेयर अवॉर्ड में बेस्ट फीमेल प्लेबैक सिंगर का नॉमिनेशन मिला था। दीपिका की फिल्म से नेहा को मिला बड़ा सिंगिंग ब्रेक-नेहा कक्कड़ को 2012 की फिल्म कॉकटेल के गाने सेकेंड हैंड जवानी से बड़ा ब्रेक मिला। गाना हिट रहा और नेहा कक्कड़ ने इंडस्ट्री में पहचान बना ली और

एक-एक कर कई हिट गाने दिए।

कई विवादों के नाम रहा नेहा का सिंगिंग करियर- प्राग गाने पर अश्लीलता के आरोप- साल 2013 में नेहा कक्कड़ ने फिल्म प्राग के गाने बोतल खोल को आवाज दी। अश्लील और डबल मीनिंग लिरिक्स के चलते सेंसर बोर्ड ने इस पर आपत्ति जताई थी।

ये गाना काफी विवादों में रहा था। मेलब न कॉन्सर्ट विवाद (2025)- ऑस्ट्रेलिया के मेलबर्न में एक कॉन्सर्ट में नेहा कथित रूप से 2 घंटे की देरी से पहुंचीं। दर्शकों ने नाराजगी जताई और सोशल मीडिया पर उनकी आलोचना हुई। नेहा और उनके भाई टोनी कक्कड़ ने आयोजन की खराब व्यवस्थाओं को जिम्मेदार बताया, जबकि आयोजकों ने उल्टा नेहा की टीम पर गैर-पेशेवर व्यवहार के आरोप लगाए और मुआवजे की मांग की। 'कैंडी शॉप/लॉलीपॉप' गाने पर अश्लीलता का आरोप- नेहा और टोनी कक्कड़ के गाने 'कैंडी शॉप' (लॉलीपॉप) के बोल और एक डांस स्टेप को लेकर सोशल मीडिया पर बड़ा विवाद हुआ। कई लोगों ने नेहा द्वारा किए गए डांस स्टेप्स को अश्लील बताया और भारतीय संस्कृति के खिलाफ माना। स्टेज परफॉर्मेंस में खुद पर पानी डालने का वीडियो- एक लाइव शो के दौरान नेहा का अपने ऊपर पानी डालकर परफॉर्म करने वाला वीडियो वायरल हुआ। इस पर सोशल मीडिया दो हिस्सों में बंट गया, कुछ लोगों ने इसे मनोरंजन माना, जबकि अन्य ने इसे अनावश्यक और भड़काऊ बताया। रियलिटी शो में भावुक होने पर ट्रोलिंग- नेहा सालों से सिंगिंग रियलिटी शो इंडियन आइडन की जज हैं। कई एपिसोड में नेहा भावुक होकर रोती दिखाई दीं। कुछ दर्शकों ने इसे वास्तविक भावना माना, जबकि कुछ ने इसे 'ओवरड्रामेटिक' कहकर ट्रोल किया। रीमिक्स गानों को लेकर आलोचना- नेहा ने कई पुराने पॉपुलर गानों के रीमिक्स गाए हैं। जिनमें कांटा लगा, छम्मा छम्मा और टिप टिप बरसा पानी जैसे दर्जनों गाने शामिल हैं। रिमिक्स गानों पर नेहा की जमकर ट्रोलिंग होती है। 2022 में नेहा ने फाल्गुनी पाठक के गाने मैंने पायल है छनकाई गाया, जिस पर ऑरिजिनल सिंगर ने न सिर्फ इसकी जमकर आलोचना की, बल्कि इसे म्यूजिक के इतिहास

के लिए हानिकारक कहा। रिलेशनशिप, ब्रेकअप, डिप्रेशन और शादी- नेशनल टेलीविजन में रिश्ता किया ऑफिशियल, फिर अचानक हुआ ब्रेकअप- नेहा कक्कड़ साल 2014 से एक्टर हिमांश कोहली के साथ रिलेशनशिप में थीं। दोनों की मुलाकात फिल्म यारियां की शूटिंग के दौरान हुई।

हिमांश फिल्म के हीरो थे और नेहा ने फिल्म के गाने आज ब्लू है पानी-पानी को आवाज दी थी। दोनों ने 2018 में रियलिटी शो इंडियन आइडल में नेशनल टेलीविजन पर रिश्ता ऑफिशियल किया और ये भी ऐलान किया कि वो जल्द ही शादी करेंगे। हालांकि 3 महीने बाद ही अचानक नेहा ने हिमांश से ब्रेकअप कर इसकी घोषणा सोशल मीडिया पर कर दी। ब्रेकअप के बाद डिप्रेशन में रहीं नेहा कक्कड़- ब्रेकअप के कुछ समय बाद नेहा कक्कड़ कई मौकों पर गाने सुनकर इंडियन आइडल के सेट पर रोती दिखीं। जनवरी 2019 में नेहा कक्कड़ ने ऑफिशियल इंस्टाग्राम से डिप्रेशन की बात कबूली और कहा कि वो जिंदगी के सबसे मुश्किल समय से गुजर रही हैं और डिप्रेशन में हैं। उन्हें एंग्जाइटी की समस्या भी रही। नशे में किया था शो के कंटेस्टेंट रोहनप्रीत ने शादी के लिए प्रपोज- नेहा कक्कड़ ने 2020 में रोहनप्रीत से शादी की थी। दरअसल, रोहनप्रीत, 2018 में सिंगिग रियलिटी शो राइजिंग स्टार के कंटेस्टेंट थे। वो शो के रनर-अप भी रहे। इसके बाद एक गाने की शूटिंग के समय रोहनप्रीत को नेहा पसंद आ गईं। उन्होंने नेहा की स्नैपचैट आइडी मांगी और दोनों के बीच बातचीत शुरू हो गई। एक दिन रोहनप्रीत ने हिम्मत कर उन्हें प्रपोज कर दिया, लेकिन नेहा ने ये कहते हुए साफ इनकार कर दिया कि वो किसी रिलेशनशिप में नहीं आना चाहतीं, उनका फोकस शादी की तरफ है। रोहन महज 25 साल के थे और वो शादी के लिए तैयार नहीं थे। आखिरकार, बात नहीं बनी। रोहनप्रीत से उनकी बातचीत बंद हो गई। फिर कुछ महीनों बाद एक दिन रोहनप्रीत ने नशे में नेहा को कॉल कर कहा कि वो उनके बिना नहीं रह सके। उन्हें जल्द ही शादी कर लेनी चाहिए। नेहा को लगा कि वो नशे में कुछ भी कह रहे हैं, अगले दिन भूल जाएंगे, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। रोहन उनसे मिलने आए और फिर शादी का प्रस्ताव दिया। शादी को समझा गया पब्लिसिटी स्टंट-नेहा की शादी की खबरों के बीच उनके गाने नेहू द व्याह अनाउंस हुआ। तब हर किसी का मानना था कि शादी की खबरें महज पब्लिसिटी स्टंट हैं। हालांकि सॉन्ग रिलीज के दिन ही नेहा कक्कड़ ने शादी कर ली। जैसे शादी से पहले नेहा ने गाना अनाउंस किया, ठीक वैसे ही शादी के चंद महीने बाद नेहा ने एक और गाना अनाउंस किया, जिसमें वो बेबी बंप के साथ नजर आई। हर किसी को लगा कि वो प्रेग्नेंट हैं, जिसके लिए एक और गाना बना है, हालांकि बाद में सिंगर ने साफ किया, ये गेटअप महज गाने के लिए है। बहन ने तोड़ा रिश्ता, जमकर हुआ विवाद-अप्रैल 2025 में सोनू कक्कड़ ने आधिकारिक सोशल मीडिया अकाउंट से पोस्ट शेयर कर नेहा और टोनी से रिश्ता खत्म करने की घोषणा कर दी। इसके बाद से ही सोनू परिवार के सभी इवेंट से नदारद दिखीं। तलाक की खबरों से चर्चा में रहीं-2026 की शुरुआत में नेहा कक्कड़ ने भी पोस्ट शेयर कर कहा कि वो सभी रिश्तों से ब्रेक ले रही हैं। इसके बाद से ही उनके तलाक की खबरें सुर्खियों में आ गईं। चर्चा इतनी बढ़ी कि नेहा ने खुद इस पर सफाई देते हुए अपील की कि उनके बयान में पति और परिवार को न घसीटा जाए।

ट्विशा से समर्थ ने पूछा था-प्रेग्नेंट कैसे हो सकती हो? यह किसका बच्चा है- सीबीआई जांच का फोकस 'प्रेग्नेंसी' टर्मिनेट करने के विवाद पर

भोपाल। एक्ट्रेस ट्विशा शर्मा की संदिग्ध मौत की जांच कर रही सीबीआई का फोकस अब 'प्रेग्नेंसी' के इर्द-गिर्द घूम रहा है। अब तक की पूछताछ और डिजिटल एविडेंस से यह साफ हो गया है कि समर्थ और ट्विशा

के बीच झगड़े की जड़ प्रेग्नेंसी थी। समर्थ ने ट्विशा से पूछा था कि तुम प्रेग्नेंट कैसे हो सकती हो? यह किसका बच्चा है? ट्विशा की सास गिरिबाला सिंह ने न्यायिक हिरासत से पहले मीडिया को बताया था कि प्रेग्नेंसी बेटे और बहू के बीच का मामला है। उन्होंने यह जरूर बताया कि ट्विशा और समर्थ ने आपसी सहमति से 30 अप्रैल को प्रेग्नेंसी टर्मिनेट कराई थी। इसके बाद ट्विशा मानसिक रूप से परेशान रहने लगी थी। सास गिरिबाला सिंह बेटे समर्थ के साथ ट्विशा को भोपाल के एक बड़े साइकेट्रिस्ट के पास भी ले गई थीं। यानी ट्विशा की मौत का रहस्य प्रेग्नेंसी के साथ जुड़ा हो सकता है, इस एंगल पर सीबीआई की टीम जांच कर रही है। सीबीआई को अब तक पोस्टमॉर्टम के बाद सुरक्षित रखे गए ट्विशा के गर्भाशय की हिस्टोपैथोलॉजी रिपोर्ट नहीं मिली है। यही वजह है कि सीबीआई अब भी सेकेंड पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट परिजन को देने से बच रही है। सीबीआई

अधिकारी मौत से जुड़े सबूतों की कड़ियां जोड़ने के लिए फोरेंसिक रिपोर्ट, मोबाइल चैट्स और आरोपियों के बयानों का मिलान कर रहे हैं। सीबीआई सूत्रों के मुताबिक, मामले के कई अहम पहलुओं की पड़ताल पूरी हो चुकी है। अब एजेंसी फॉरेंसिक रिपोर्ट और विशेषज्ञों की राय के आधार पर घटनाक्रम की अंतिम कड़ियां जोड़ने में जुटी है। इस केस में सीबीआई को ट्विशा और उसकी मां के बीच हुई चैटिंग भी मिली है, जिसमें ट्विशा ने कहा था कि समर्थ मुझसे पूछ रहा है कि किसका बच्चा है? मैं उसकी बातों को कैसे इग्नोर करूं? समर्थ ने सीबीआई को बताया है कि प्रेग्नेंसी को लेकर ट्विशा और उसके बीच सब कुछ सामान्य नहीं था। उसने ट्विशा के किसी दोस्त के बारे में भी सीबीआई को जानकारी दी है। ट्विशा के बारे में उसने बताया कि उसका बहुत जल्दी मूड स्विंग होता था। कभी किसी बात पर राजी होती थी, तो कभी उसी बात पर नाराज हो जाती थी। गिरिबाला ने कहा था- प्रेग्नेंसी की खबर से खुश थे हम- गिरिबाला ने अपने बयान में बताया था कि प्रेग्नेंसी की खबर से हम तो खुश थे, लेकिन ट्विशा खुद बच्चा नहीं चाहती थी। उसे लगता था कि बच्चे का जन्म उसके कॅरियर में दिक्कत

बनेगा। सीबीआई को पूछताछ में समर्थ ने यह भी बताया है कि शादी के छह महीने में ट्विशा पांच बार दिल्ली और अजमेर गई थी। अजमेर में ट्विशा के भाई की पोस्टिंग है। 30 अप्रैल को प्रेग्नेंसी टर्मिनेशन के बाद भी ट्विशा अपने माता-पिता के पास दिल्ली गई थी। इसके कुछ दिनों बाद वह भोपाल लौटी थी। डॉक्टर बताएंगे- ट्विशा क्यों डिप्रेशन में थी ? सीबीआई जल्द ही उस डॉक्टर के भी बयान दर्ज करेगी, जिसके पास ट्विशा के डिप्रेशन का इलाज चला था। सीबीआई डॉक्टर से यह जानना चाहती है कि मरीज ने उन्हें क्या-क्या परेशानियां बताई थीं? प्रेग्नेंसी टर्मिनेट करने का फैसला क्यों किया गया?क्या प्रेग्नेंसी टर्मिनेशन ही ट्विशा के डिप्रेशन की असल वजह थी? डॉक्टर के जवाबों के बाद सीबीआई ट्विशा के चैट्स, ट्विशा की मां रेखा शर्मा के बयान और समर्थ के बयानों को क्रॉस-चेक कर किसी निष्कर्ष पर पहुंचेगी। ब्यूटी पार्लर, इवनिंग वॉक और सीसीटीवी की कड़ियां- सीबीआई इस मामले में साइकेट्रिस्ट से भी राय ले रही है। वजह यह है कि ट्विशा 12 मई को दोपहर 3 बजे ब्यूटी पार्लर गई थी। उसने हेड मसाज लिया था और शाम 6:15 बजे लौटी थी। इसके बाद वह इवनिंग वॉक पर गई। छत पर जाने से पहले उसके हाथ में हेडफोन था। सीबीआई ने सीसीटीवी फुटेज भी देख लिए हैं।हालांकि इनमें ऊपर क्या हुआ, यह नजर नहीं आता। फुटेज में सिर्फ ट्विशा को सीढ़ियों से उतारते और उसे सीपीआर देते हुए देखा जा सकता है। जल्द चार्जशीट दाखिल करने की तैयारी में है सीबीआई- सीबीआई के चार इमली स्थित दफ्तर में दिल्ली ब्रांच के अधिकारी इस केस से जुड़े अलग-अलग पहलुओं की विस्तृत रिपोर्ट तैयार कर रहे हैं। हिस्टोपैथोलॉजी सहित कुछ अन्य रिपोर्ट अभी मिलनी बाकी हैं। सीबीआई सूत्रों ने बताया कि इस केस के सबूतों की कड़ियां लगभग तैयार हैं। फोरेंसिक एविडेंस पर काम चल रहा है। अगले दो महीने में इस केस की चार्जशीट दाखिल कर दी जाएगी।

आधुनिक समाचार के पाठक 'आनंद कुमार पाठक' जी की रचना

अरे सुनो, आज मैंने ज़िंदगी को दावत पर बुलाया है, उसके लिए पैगाम भिजवाया है। अर्सों

बाद उसे देखने की कशिश सी जगी है, अपने आप से मिलने की तड़प सी लगी है। रूठ गया था अनजाना सा बनकर, अपनों में बेगाना सा बनकर। चाहत जगी लगा लूँ गले उसे, इसलिए आज उसे पैगाम भिजवाया है, आज मैंने उसे दावत पर बुलाया है। ?पूछना है उससे क्या है ये रिश्ता, जलते मोम पर जैसे गहराता पतंगा। तुम बिन सिर्फ अपना नाम ले के चलता रहा, बिन तेल के दीये सा जलता रहा। क्यों बेबस बना दिया था इतना मुझे, कि मुस्कुराहटों में दर्द समेटता सा रहा। ?चल बैठ, जी भर देख लूँ तुझे ऐ ज़िंदगी, जिसमें आज तक बिना पतवार के नाव चलाता रहा। थक सा गया था तेरी ये रुसवाई देख कर, आज पूछूँगा तुझसे तेरी दुहाई दे कर। बोल, बैठेगा ना मेरे पास मुझे अपने में समेट कर, अब सारे मौसम का मिज़ाज तेरे संग बिताना है, इसलिए आज मैंने ऐ ज़िंदगी तुझे दावत पर बुलाया है, तेरे लिए एक पैगाम भिजवाया है। (आनंद कुमार पाठक)

स्वत्वाधिकारी एवं मुद्रक डॉ. दीपक अरोरा द्वारा रामा प्रिंटर्स 53/25/1 ए बेली रोड न्यू कटरा प्रयागराज (उ.प्र) 211002 से मुद्रित एवं सी-41यूपी एसआईडीसी औद्योगिक क्षेत्र नैनी प्रयागराज।
संपादक/प्रकाशक डा.पुनीत अरोरा
मो.न.09415608710
RNINO.UPHIN/2015/63398
www.adhuniksamachar.com

नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी0आर0बी0 एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगा।